रुचिरा

तृतीयो भागः

अष्टमवर्गाय संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

0851 – रुचिरा (तृतीयो भागः)
अष्टमवर्गाय संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

ISBN 978-81-7450-810-2

प्रथम संस्करण
जनवरी 2008 माघ 1929

पुनर्मुद्रण
जनवरी 2008 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
जनवरी 2011 माघ 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
अक्तूबर 2012 आश्विन 1934
अक्तूबर 2013 आश्विन 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
दिसंबर 2016 पौष 1938
जनवरी 2018 माघ 1939
जनवरी 2019 पौष 1940
सितंबर 2019 भाद्रपद 1941
मार्च 2021 फाल्गुन 1942 (NTR)
नवंबर 2021 अग्रहायण 1943

PD 60T RPS

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा भारत प्रिंटर्स, ए-120, टी.पी. नगर, मेरठ-250002 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*विपिन दिवान*
संपादक	:	*मुन्नी लाल*
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	*दीपक जैसवाल*

आवरण
करन चड्ढा

चित्रांकन
दुर्गा बाई व्याम

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीयज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रित-शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। 2018 तमे वर्षे संशोधितं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः

अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभत्रिपाठि- महाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी.पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्षे सङ्घटितायाः राष्ट्रिय-पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां बहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

नयी दिल्ली
30 नवम्बर 2007

निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली।

मुख्य परामर्शक

राधावल्लभ त्रिपाठी, *अध्यक्ष,* संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष,* भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सदस्य

ज्ञानदेवमणि त्रिपाठी, *सहायक निदेशक,* सीमैट, एस.सी.ई.आर.टी, पटना, बिहार।

पंकज कुमार मिश्र, *प्रवक्ता संस्कृत,* सेन्ट स्टीफेन्स कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–7

राघवेन्द्र प्रपन्न, *प्रवक्ता,* एम.वी. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, गीता कॉलोनी, दिल्ली–31

नारायण दाश, *प्रवक्ता संस्कृत,* रामकृष्ण मिशन आवासीय महाविद्यालय, नरेन्द्रपुर, कोलकाता।

संगीता गुंदेचा, *प्रवक्ता संस्कृत,* तुलनात्मक भाषा तथा संस्कृति विभाग, बरकतउला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश।

पूर्वा भारद्वाज, निरंतर, नयी दिल्ली।

पुरुषोत्तम मिश्र, *पी.जी.टी.* संस्कृत, रा. व. मा. बा. विद्यालय नं. 1, मॉडल टाउन, दिल्ली।

टीकाराम त्रिपाठी, *पी.जी.टी.* संस्कृत, शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश।

सुगन्ध पाण्डेय, *टी.जी.टी.* संस्कृत, केन्द्रीय विद्यालय, काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड।

कमलेश महता, टी.जी.टी. संस्कृत, सर्वोदय कन्या विद्यालय, महिपालपुर, दिल्ली।

सदस्य एवं समन्वयक

रणजित बेहेरा, *प्रवक्ता संस्कृत,* भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों एवं शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है। प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, *कुलपति,* श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली; प्रो. रमेश भारद्वाज, *संस्कृत विभाग,* दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; प्रो. रंजना अरोड़ा, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; प्रो. कृष्ण चन्द्र त्रिपाठी, (संस्कृत), भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; प्रो. जतीन्द्र मोहन मिश्र, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; डॉ. आभा झा, *पी.जी.टी.*, (संस्कृत), गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीनपार्क, नयी दिल्ली तथा श्रीमती लता अरोड़ा, सेवानिवृत्त, *टी.जी.टी,* (संस्कृत), केंद्रिय विद्यालय संगठन, नयी दिल्ली; डॉ. वीरेन्द्र कुमार, टी.जी.टी., (संस्कृत), केन्द्रीय विद्यालय, फरीदाबाद न. 1, नयी दिल्ली; सरोज पुरी, (*सेवानिवृत्त*), टी.जी.टी., (संस्कृत), डी.ए.वी. विद्यालय, पीतमपुरा, नयी दिल्ली ने पुस्तक पुनरीक्षण में अनेकविध सहयोग एवं मार्गदर्शन किया है। परिषद् सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है।

परिषद् प्रोफ़ेसर उमाशंकर शर्मा ऋषि, सेवानिवृत, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना एवं डॉ. अष्टभुजा शुक्ल, प्रवक्ता संस्कृत, संस्कृत महाविद्यालय, चित्राखोर, बरहुआ, वस्ती, उत्तर प्रदेश की आभारी है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना यथासम्भव योगदान दिया है।

परिषद् डॉ. रमाकान्त शुक्ल एवं डॉ. श्रीधर भास्कर वर्णेकर के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है जिनकी रचनाओं से इस पुस्तक में पाठ्य-सामग्री ली गई है।

पुस्तक निर्माण में सहयोग के लिए परशराम कौशिक, *प्रभारी,* कम्प्यूटर स्टेशन, भाषा विभाग; दुर्गा देवी, *प्रूफ रीडर,* कु. प्रीति झा, *जूनियर प्रोजेक्ट फेलो,* संस्कृत, कमलेश आर्य एवं कु. अनीता, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* धन्यवाद के पात्र हैं।

भूमिका

संस्कृत भाषा प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, कला, दर्शन, विज्ञान आदि विषयों की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है। वैविध्यपूर्ण भारत देश में भावनात्मक एकता का सञ्चार संस्कृत के माध्यम से होता रहा है। यही कारण है कि भारत की अन्य भाषाओं पर संस्कृत व्याकरण तथा वाक्य-रचना का प्रभाव परिलक्षित होता है। परस्पर सहयोग, त्याग, सत्य, अहिंसा, राष्ट्रभक्ति, विश्वबन्धुत्व आदि भावनाओं की प्रेरणाप्रद अनुभूति संस्कृत साहित्य के अध्ययन से हाती है। आधुनिक संस्कृत रचनाएँ समाज के उपेक्षित समुदाय के प्रति भी मुखर हैं।

सम्प्रेषणात्मक उपागम के आधार पर संस्कृत के शिक्षण को विद्यालय स्तर पर सुगम, रुचिकर तथा सुग्राह्य रूप में प्रस्तुत करने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार स्वीकृत पाठ्यक्रम के अनुसार राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्त्वावधान में संस्कृत की नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की योजना प्रारम्भ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत भाषा-विभाग द्वारा उच्चप्राथमिक स्तर पर तीन भागों में संस्कृत की पुस्तकों का विकास किया गया है। इसमें अध्येताओं को जागरूक बनाने वाली तथा यथार्थ जीवन से संबद्ध रोचक एवं ज्ञानवर्धक सामग्री दी गई है।

रुचिरा पुस्तक शृङ्खला अपने नाम के अनुसार रुचिवर्धक सामग्री से विद्यालय स्तर पर छात्र-छात्राओं में संस्कृत भाषा के प्रयोग में कुशलता तो देगी ही साथ ही संस्कृत भाषा तथा साहित्य के प्रति उनमें अपेक्षित अभिरुचि भी उत्पन्न करने में समर्थ होगी, ऐसा विश्वास है।

इसी शृङ्खला का तृतीय पुष्प **रुचिरा तृतीयो भागः** संशोधित संस्करण 2017 छात्र-छात्राओं के लिए प्रस्तुत है। इसके निर्माण में इस बात का ध्यान रखा गया है कि कक्षा में शिक्षक और विद्यार्थियों की अन्तःक्रिया प्रश्नोत्तर माध्यम से संस्कृत में ही हो जिससे विद्यार्थी सरल संस्कृत वाक्यों को समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने का कौशल विकसित कर सकें।

रुचिरा के इस भाग में कुल 15 पाठ हैं जिनमें छह पद्यात्मक तथा तीन संवादात्मक या नाट्यरूप हैं। शेष पाठ कथात्मक या निबन्धात्मक हैं। पद्यात्मक पाठों में *सुभाषितानि* नैतिक मूल्यों से युक्त प्राचीन कवियों की सुन्दर उक्तियों का संकलन है। इसमें संकलित सभी पद्य गेय हैं। *सदैव पुरतो निधेहि चरणम्, भारतजनताऽहम्, नीतिनवनीतम्, क्षितौ राजते भारत-स्वर्ण-भूमिः तथा प्रहेलिकाः अन्य पद्य पाठ हैं।* संस्कृत भाषा की छन्दः सम्पदा की लय एवं गेयता का आनन्द छात्रों को प्राप्त हो, एतदर्थ कुछ नवीन गीत भी इस पुस्तक में दिये गए हैं। *सदैव पुरतो निधेहि चरणम्* स्व. श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा रचित उद्‌बोधन-कविता के रूप में है साथ ही भारतजनताऽहम् डॉ. रमाकान्त शुक्ल द्वारा प्रणीत है।

संवादात्मक पाठों में *डिजिभारतम्, गृहं शून्यं सुतां विना, कः रक्षति कः रक्षितः* तथा *सप्तभगिन्यः को रखा गया है, यह पाठ* उत्तर-पूर्व भारत के सात राज्यों के सांस्कृतिक महत्त्व को दिखाने वाला पाठ है। *कः रक्षति कः रक्षितः* में संवाद माध्यम से आधुनिक जीवन में बढ़ते प्लास्टिक वस्तुओं के उपयोग से उत्पन्न होनेवाली पर्यावरणीय समस्याओं पर दृष्टि डाली गई है।

कथात्मक पाठों में *बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता* विष्णुशर्मा द्वारा रचित प्रसिद्ध नीतिकथा ग्रन्थ पञ्चतन्त्र से संकलित है जिसमें शृगाल तथा मूर्ख सिंह की कथा दी गई है। *कण्टकेनैव कण्टकम्* पाठ एक लोककथा का संस्कृत में आधुनिक रूपान्तरण है जिसमें लोककथा के कौतुक के निर्वाह के साथ प्रत्युत्पन्नमतित्व का रोचक उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। पाठ्य सामग्री में विविधता बनाएँ रखने के लिए दो वर्णनात्मक निबन्ध *संसारसागरस्य नायकाः* तथा *आर्यभटः* को पाठ के रूप में स्थान दिया गया है। *सावित्री बाई फुले* पाठ में, महाराष्ट्र में स्त्री-शिक्षा तथा दलित चेतना के प्रसार कार्यों में अग्रणी एक प्रसिद्ध महिला की जीवनी दी गयी है।

इस प्रकार पाठों के चयन में संस्कृत की विविधता का प्रतिनिधित्व देकर रोचकता का ध्यान रखा गया है। प्रत्येक पाठ के आरम्भ में पाठ-परिचय देते हुए उसके अन्त में शब्दार्थ, अभ्यास-प्रश्न तथा योग्यता-विस्तार के द्वारा विद्यार्थियों के बुद्धि-विकास एवं भाषा-संरचनात्मक ज्ञान की प्रगति पर ध्यान रखा गया है।

संक्षेप में **रुचिरा तृतीयो भागः** में निम्नलिखित बिन्दुओं पर बल दिया गया है:

- संस्कृत भाषा और साहित्य की समकालीन सन्दर्भों में पहचान
- अभी तक पाठ्य-पुस्तकों में उपेक्षित विषयों को रेखांकित करना
- संस्कृत शब्दों और वाक्यों का शुद्ध उच्चारण
- दिये गये निर्देशों के आधार पर प्रश्नोत्तर एवं प्रश्न-निर्माण का कौशल
- भाषिक तत्त्वों (श्रवण, भाषण, पठन तथा लेखन) का कौशल
- जीवनमूल्यों से युक्त सुभाषित-पद्यों का परिचय
- संस्कृत में सामान्य वार्तालाप कर सकने की क्षमता
- संस्कृत वर्तनी को शुद्ध रूप में जानने और लिखने की क्षमता
- रोचक प्राचीन और आधुनिक कथाओं के द्वारा कल्पना-शीलता का विकास

शिक्षक की भूमिका

किसी पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों तक पहुँचाने में शिक्षक की मध्यस्थता तो आवश्यक होती ही है, उसे अत्यधिक सुरुचिपूर्ण, सहज और ग्राह्य बनाने में भी उसकी सक्रिय भूमिका महत्त्वपूर्ण है। अध्यापन की सफलता के लिए एक ओर तकनीकी शैली से निर्मित पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षा रहती है तो दूसरी ओर पाठ्यपुस्तकों में निहित व्याकरण-सम्बन्धी बिन्दुओं और भाषिक तत्त्वों के प्रायोगिक अभ्यास हेतु कुशल अध्यापन-शैली भी अपेक्षित है। आशा की जाती है कि शिक्षकगण प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से भाषा के अपेक्षित कौशलों को विद्यार्थियों की सहभागिता के साथ विद्यार्थियों तक पहुँचाने में अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान करेंगे। कथा-प्रसङ्गों तथा गीतों को हृदयङ्गम बनाने के लिए आवश्यकता के अनुसार दृश्य-श्रव्य यान्त्रिक माध्यमों का उपयोग अपेक्षित है। जो पाठ संवाद-परक हैं उनका अभिनय भी विद्यार्थियों से कराया जा सकता है।

इस संकलन को यद्यपि विद्यार्थियों के अनुरूप बनाने का पूरा प्रयास किया गया है तथापि इसे विद्यार्थियों के लिए और भी अधिक उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं के बहुमूल्य एवं सार्थक सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

mkGandhi

पाठानुक्रमणिका

मङ्गलम्

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं
तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥1॥

–शुक्लयजुर्वेदः(34.1)

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्या-
न्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥2॥

–शुक्लयजुर्वेदः(34.6)

रूपान्तरम्

जो रहता है जाग्रत और दूर-दूर तक जाता है,
सोया रह कर भी ऐसे ही जा कर वापस आता है।
दूर-दूर वह जाने वाला सब तेजों का ज्योतिनिधान
सदा समन्वित शुभसङ्कल्पों से वह मन मेरा बने महान् ॥1॥

जो जन-जन को बागडोर से इधर-उधर ले जाता है,
चतुर सारथी ज्यों घोड़ों को इच्छित चाल चलाता है।
सदा प्रतिष्ठित हृदयदेश में अजर और अतिशय गतिमान्
सदा समन्वित शुभसङ्कल्पों से वह मन मेरा बने महान् ॥2॥

प्रथमः पाठः

सुभाषितानि

[‘सुभाषित’ शब्द ‘सु + भाषित’ इन दो शब्दों के मेल से सम्पन्न होता है। सु का अर्थ सुन्दर, मधुर तथा भाषित का अर्थ वचन है। इस तरह *सुभाषित* का अर्थ सुन्दर/मधुर वचन है। प्रस्तुत पाठ में सूक्तिमञ्जरी, नीतिशतकम्, मनुस्मृतिः, शिशुपालवधम्, पञ्चतन्त्रम् से रोचक और विचारपरक श्लोकों को संगृहीत किया गया है।]

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
सुस्वादुतोयाः प्रभवन्ति नद्यः
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः ।।1।।

साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः
तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ।।2।।

लुब्धस्य नश्यति यशः पिशुनस्य मैत्री
नष्टक्रियस्य कुलमर्थपरस्य धर्मः।
विद्याफलं व्यसनिनः कृपणस्य सौख्यं
राज्यं प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य ।।3।।

पीत्वा रसं तु कटुकं मधुरं समानं
माधुर्यमेव जनयेन्मधुमक्षिकासौ।
सन्तस्तथैव समसज्जनदुर्जनानां
श्रुत्वा वचः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति ।।4।।

विहाय पौरुषं यो हि दैवमेवावलम्बते ।
प्रासादसिंहवत् तस्य मूर्ध्नि तिष्ठन्ति वायसाः ।।5।।

पुष्पपत्रफलच्छायामूलवल्कलदारुभिः ।
धन्या महीरुहाः येषां विमुखं यान्ति नार्थिनः ।।6।।

चिन्तनीया हि विपदाम् आदावेव प्रतिक्रियाः ।
न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे ।।7।।

गुणज्ञेषु	–	गुणियों में
सुस्वादुतोयाः	–	स्वादिष्ट जल
प्रभवन्ति	–	निकलती हैं/उत्पन्न होती हैं
समुद्रमासाद्य (समुद्रम्+आसाद्य)	–	समुद्र में मिलकर/पहुँचकर
भवन्त्यपेयाः (भवन्ति+अपेयाः)	–	पीने योग्य नहीं होती
विषाणहीनः	–	सींग के बिना
खादन्नपि (खादन्+अपि)	–	खाते हुए भी
जीवमानः	–	जिन्दा रहता हुआ
पिशुनस्य	–	चुगलखोर/चुगली करने वाले की
व्यसनिनः	–	बुरी लत वाले की
नराधिपस्य (नर+अधिपस्य)	–	राजा का/के/की

जनयेन्मधुमक्षिकासौ (जनयेत्+मधुमक्षिका+असौ)	–	यह मधुमक्खी पैदा करती/ निर्माण करती है
सन्तस्तथैव (सन्त:+तथा+एव)	–	वैसे ही सज्जन
सृजन्ति	–	निर्माण करते हैं
वायसा:	–	कौए
वल्कल	–	पेड़ की छाल
दारुभि:	–	लकड़ियों द्वारा
महीरुहा:	–	वृक्ष
कूपखननं	–	कुआं खोदना
वह्निना	–	अग्नि द्वारा

अभ्यास:

1. **पाठे दत्तानां पद्यानां सस्वरवाचनं कुरुत।**
2. **श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत–**
   (क) समुद्रमासाद्य .... ।
   (ख) .... वच: मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।
   (ग) तद्भागधेयं .... पशूनाम्।
   (घ) विद्याफलं .... कृपणस्य सौख्यम्।
   (ङ) पौरुषं विहाय य: .... अवलम्बते।
   (च) चिन्तनीया हि विपदाम् ....प्रतिक्रिया:।
3. **प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत–**
   (क) व्यसनिन: किं नश्यति?
   (ख) कस्य यश: नश्यति?
   (ग) मधुमक्षिका किं जनयति?

(घ) मधुरसूक्तरसं के सृजन्ति?

(ङ) अर्थिनः केभ्यः विमुखा न यान्ति?

4. अधोलिखित-तद्भव-शब्दानां कृते पाठात् चित्वा संस्कृतपदानि लिखत-

यथा-	कंजूस	कृपणः
	कड़वा	....
	पूँछ	....
	लोभी	....
	मधुमक्खी	....
	तिनका	....

5. अधोलिखितेषु वाक्येषु कर्तृपदं क्रियापदं च चित्वा लिखत-

वाक्यानि	कर्त्ता	क्रिया
यथा-सन्तः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।	सन्तः	सृजन्ति
(क) निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।	....	....
(ख) गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति।	....	....
(ग) मधुमक्षिका माधुर्यं जनयेत्।	....	....
(घ) पिशुनस्य मैत्री यशः नाशयति।	....	....
(ङ) नद्यः समुद्रमासाद्य अपेयाः भवन्ति।	....	....

6. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) <u>गुणाः</u> गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति।

(ख) <u>नद्यः</u> सुस्वादुतोयाः भवन्ति।

(ग) <u>लुब्धस्य</u> यशः नश्यति।

(घ) <u>मधुमक्षिका</u> माधुर्यमेव जनयति।

(ङ) तस्य <u>मूर्ध्नि</u> तिष्ठन्ति वायसाः।

7. उदाहरणानुसारं पदानि पृथक् कुरुत-

यथा-समुद्रमासाद्य — समुद्रम् + आसाद्य

माधुर्यमेव	–	....	+	....
अल्पमेव	–	....	+	....
सर्वमेव	–	....	+	....
दैवमेव	–	....	+	....
महात्मनामुक्तिः	–	....	+	....
विपदामादावेव	–	....	+	....

योग्यता-विस्तारः

प्रस्तुत पाठ में महापुरुषों की प्रकृति, गुणियों की प्रशंसा, सज्जनों की वाणी, साहित्य-संगीत-कला की महत्ता, चुगलखोरों की दोस्ती से होने वाली हानि, स्त्रियों के प्रसन्न रहने में सबकी खुशहाली को आलङ्कारिक भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

पाठ के श्लोकों के समान अन्य सुभाषितों को भी स्मरण रखें तथा जीवन में उनकी उपादेयता/संगति पर विचार करें।

(क) येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

(ख) गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।

(ग) न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।

(घ) दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलङ्कृतोऽपि सन्।

(ङ) न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम्।

(च) उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तङ्गते तथा (उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च)।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।।

उपर्युक्त सुभाषितों के अंशों को पढ़कर स्वयं समझने का प्रयत्न करें तथा संस्कृत एवं अन्य भारतीय-भाषाओं के सुभाषितों का संग्रह करें।

'गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति'–इस पंक्ति में विसर्ग सन्धि के नियम में 'गुणाः' के विसर्ग का दोनों बार लोप हुआ है। सन्धि के बिना पंक्ति 'गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति' होगी।

0851CH02

द्वितीयः पाठः

बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता

[प्रस्तुत पाठ संस्कृत के प्रसिद्ध कथाग्रन्थ 'पञ्चतन्त्रम्' के तृतीय तन्त्र 'काकोलूकीयम्' से संकलित है। पञ्चतन्त्र के मूल लेखक विष्णुशर्मा हैं। इसमें पाँच खण्ड हैं जिन्हें 'तन्त्र' कहा गया है। इनमें गद्य-पद्य रूप में कथाएँ दी गयी हैं जिनके पात्र मुख्यतः पशु-पक्षी हैं।]

कस्मिंश्चित् वने खरनखरः नाम सिंहः प्रतिवसति स्म। सः कदाचित् इतस्ततः परिभ्रमन् क्षुधार्तः न किञ्चिदपि आहारं प्राप्तवान्। ततः सूर्यास्तसमये एकां महतीं गुहां दृष्ट्वा सः अचिन्तयत्-"नूनम् एतस्यां गुहायां रात्रौ कोऽपि जीवः आगच्छति। अतः अत्रैव निगूढो भूत्वा तिष्ठामि" इति।

एतस्मिन् अन्तरे गुहायाः स्वामी दधिपुच्छः नामकः शृगालः समागच्छत्। स च यावत् पश्यति तावत् सिंहपदपद्धतिः गुहायां प्रविष्टा दृश्यते, न च बहिरागता। शृगालः अचिन्तयत्-"अहो विनष्टोऽस्मि। नूनम् अस्मिन् बिले सिंहः अस्तीति तर्कयामि। तत् किं करवाणि?" एवं विचिन्त्य

दूरस्थः रवं कर्तुमारब्धः–"भो बिल! भो बिल! किं न स्मरसि, यन्मया त्वया सह समयः कृतोऽस्ति यत् यदाहं बाह्यतः प्रत्यागमिष्यामि तदा त्वं माम् आकारयिष्यसि? यदि त्वं मां न आह्वयसि तर्हि अहं द्वितीयं बिलं यास्यामि इति।"

अथ एतच्छ्रुत्वा सिंहः अचिन्तयत्–"नूनमेषा गुहा स्वामिनः सदा समाह्वानं करोति। परन्तु मद्भयात् न किञ्चित् वदति।"

अथवा साध्विदम् उच्यते–

भयसन्त्रस्तमनसां हस्तपादादिकाः क्रियाः।
प्रवर्तन्ते न वाणी च वेपथुश्चाधिको भवेत्।।

तदहम् अस्य आह्वानं करोमि। एवं सः बिले प्रविश्य मे भोज्यं भविष्यति। इत्थं विचार्य सिंहः सहसा शृगालस्य आह्वानमकरोत्। सिंहस्य उच्चगर्जन-प्रतिध्वनिना सा गुहा उच्चैः शृगालम् आह्वयत्। अनेन अन्येऽपि पशवः भयभीताः अभवन्। शृगालोऽपि ततः दूरं पलायमानः इममपठत्–

अनागतं यः कुरुते स शोभते
स शोच्यते यो न करोत्यनागतम्।
वनेऽत्र संस्थस्य समागता जरा
बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता।।

कस्मिंश्चित् (कस्मिन्+चित्)	–	किसी (वन में)
क्षुधार्तः (क्षुधा+आर्तः)	–	भूख से व्याकुल
अन्तरे	–	बीच में
निगूढो भूत्वा	–	छिपकर
सिंहपदपद्धतिः	–	शेर के पैरों के चिह्न
रवः	–	शब्द/आवाज
यावत्-तावत्	–	जबतक, तबतक
समयः	–	शर्त
बाह्यतः	–	बाहर से
यदि-तर्हि	–	अगर, तो
तच्छ्रुत्वा (तत्+श्रुत्वा)	–	वह सुनकर
भयसन्त्रस्तमनसाम्	–	डरे हुए मन वालों का
हस्तपादादिकाः (हस्तपाद+आदिकाः)	–	हाथ-पैर आदि से सम्बन्धित
वेपथुः	–	कम्पन
भोज्यम्	–	भोजन योग्य (पदार्थ)
सहसा	–	एकाएक
अनागतम्	–	आने वाले (दुःख) को
शोच्यते	–	चिन्तनीय होता है
संस्थस्य	–	रहते हुए का/के/की
जरा	–	बुढ़ापा
कुरुते/करोति	–	(निराकरण) करता है
बिलस्य	–	बिल का (गुफा का)

अभ्यासः

1. **उच्चारणं कुरुत-**

कस्मिंश्चित्	विचिन्त्य	साध्विदम्
क्षुधार्तः	एतच्छ्रुत्वा	भयसन्त्रस्तमनसाम्
सिंहपदपद्धतिः	समाह्वानम्	प्रतिध्वनिः

2. **एकपदेन उत्तरं लिखत-**

(क) सिंहस्य नाम किम्?

(ख) गुहायाः स्वामी कः आसीत्?

(ग) सिंहः कस्मिन् समये गुहायाः समीपे आगतः?

(घ) हस्तपादादिकाः क्रियाः केषां न प्रवर्तन्ते?

(ङ) गुहा केन प्रतिध्वनिता?

3. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) खरनखरः कुत्र प्रतिवसति स्म?

(ख) महतीं गुहां दृष्ट्वा सिंहः किम् अचिन्तयत्?

(ग) शृगालः किम् अचिन्तयत्?

(घ) शृगालः कुत्र पलायितः?

(ङ) गुहासमीपमागत्य शृगालः किं पश्यति?

(च) कः शोभते?

4. रेखांकितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) <u>क्षुधार्तः</u> सिंहः कुत्रापि आहारं न प्राप्तवान्?

(ख) <u>दधिपुच्छः</u> नाम श्रृगालः गुहायाः स्वामी आसीत्?

(ग) एषा गुहा <u>स्वामिनः</u> सदा आह्वानं करोति?

(घ) भयसन्त्रस्तमनसां <u>हस्तपादादिकाः</u> क्रियाः न प्रवर्तन्ते?

(ङ) आह्वानेन श्रृगालः <u>बिले</u> प्रविश्य सिंहस्य भोज्यं भविष्यति?

5. घटनाक्रमानुसारं वाक्यानि लिखत-

(क) गुहायाः स्वामी दधिपुच्छः नाम शृगालः समागच्छत्।

(ख) सिंहः एकां महतीं गुहाम् अपश्यत्।

(ग) परिभ्रमन् सिंहः क्षुधार्तो जातः।

(घ) दूरस्थः शृगालः रवं कर्तुमारब्धः।

(ङ) सिंहः शृगालस्य आह्वानमकरोत्।

(च) दूरं पलायमानः शृगालः श्लोकमपठत्।

(छ) गुहायां कोऽपि अस्ति इति शृगालस्य विचारः।

6. यथानिर्देशमुत्तरत-

(क) 'एकां महतीं गुहां दृष्ट्वा सः अचिन्तयत्' अस्मिन् वाक्ये कति विशेषणपदानि, संख्यया सह पदानि अपि लिखत?

(ख) तदहम् अस्य आह्वानं करोमि- अत्र 'अहम्' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ग) 'यदि त्वं मां न आह्वयसि' अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किम्?

(घ) 'सिंहपदपद्धतिः गुहायां प्रविष्टा दृश्यते' अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम्?

(ङ) 'वनेऽत्र संस्थस्य समागता जरा' अस्मिन् वाक्ये अव्ययपदं किम्?

7. मञ्जूषातः अव्ययपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

नीचैः	तदा	कश्चन	परम्	यदि	सहसा	तर्हि	यदा	च	दूरे

एकस्मिन् वने ……………… व्याधः जालं विस्तीर्य ……………… स्थितः। क्रमशः आकाशात् सपरिवारः कपोतराजः ……………… आगच्छत्। ……………… कपोताः तण्डुलान् अपश्यन् ……………… तेषां लोभो जातः। परं राजा सहमतः नासीत्। तस्य युक्तिः आसीत् .. …………… वने कोऽपि मनुष्यः नास्ति। कुतः तण्डुलानाम् सम्भवः। ……………… राज्ञः उपदेशम् अस्वीकृत्य कपोताः तण्डुलान् खादितुं प्रवृत्ताः जाले ……………… निपतिताः। अतः उक्तम् '…………… विदधीत न क्रियाम्'।

योग्यता-विस्तारः

ग्रन्थ-परिचय – विष्णुशर्मा ने राजा अमरशक्ति के मूर्ख पुत्रों को कुशल राजनीतिज्ञ बनाने के उद्देश्य से कथाओं के संकलन के रूप में पञ्चतन्त्र की रचना की थी। इसमें मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश तथा अपरीक्षित-कारक; इन पाँच खण्डों में कुल 70 कथाएँ तथा 900 श्लोक हैं। श्लोकों में प्रायः तर्कपूर्ण नीतिश्लोक प्रयुक्त हैं। पञ्चतन्त्र का अनुवाद चतुर्थ शताब्दी के आस-पास ईरान की पहलवी भाषा में हुआ था। इसी के आधार पर विदेशी भाषाओं में इसके अनेक अनुवाद हुए।

'काकोलूकीयम्' पञ्चतन्त्र का तृतीय तन्त्र है। इसका नाम काक और उलूक की मुख्य कथा के कारण पड़ा है।

व्याकरणम्

अव्यय – संस्कृत में दो प्रकार के शब्द हैं-विकारी तथा अविकारी। विकारी शब्द परिवर्तनशील हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्द विकारी हैं। जैसे-बालकः, सः, शुक्लः, गच्छति। अविकारी शब्द अव्यय कहलाते हैं। इनके रूप कभी नहीं बदलते।

जैसे–अत्र, अधुना, अपि।

अव्ययों के भी रूढ और यौगिक दो रूप मिलते हैं। रूढ अव्ययों के खण्ड नहीं होते जैसे–च, अपि, वा, तु, खलु, न इत्यादि। यौगिक अव्ययों के खण्ड होते हैं ये कृत्, तद्धित या समास के रूप में होते हैं। कृत् से बने अव्यय हैं–गत्वा, गन्तुम् इत्यादि। तद्धित से बने अव्यय हैं–सर्वथा, एकदा, तत्र, इत्थम्, कथम् इत्यादि। समास के रूप में अव्यय हैं–प्रतिदिनम्, यथाशक्ति इत्यादि।

प्रस्तुत पाठ में कदाचित्, इतस्ततः (इतः + ततः), न, दृष्ट्वा, नूनम्, अपि, तर्हि, अत्र, एव (अत्रैव), भूत्वा, इति, च, बहिः, अहो, एवम्, विचिन्त्य, सह, तदा, यदि, अथ, श्रुत्वा, सदा, परन्तु (परम् + तु), प्रविश्य, सहसा, कदापि (कदा + अपि) ये अव्यय हैं। इनकी उपर्युक्त कोटियों में पहचान की जा सकती है।

0851CH03

तृतीयः पाठः

डिजीभारतम्

[प्रस्तुत पाठ "डिजिटलइण्डिया" के मूल भाव को लेकर लिखा गया निबन्धात्मक पाठ है। इसमें वैज्ञानिक प्रगति के उन आयामों को छुआ गया है, जिनमें हम एक "क्लिक" द्वारा बहुत कुछ कर सकते हैं। आज इन्टरनेट ने हमारे जीवन को कितना सरल बना दिया है। हम भौगोलिक दृष्टि से एक दूसरे के अत्यन्त निकट आ गए हैं। इसके द्वारा जीवन के प्रत्येक क्रियाकलाप सुविधाजनक हो गए हैं। ऐसे ही भावों को यहाँ सरल संस्कृत में व्यक्त किया गया है।]

अद्य सम्पूर्णविश्वे "डिजिटलइण्डिया" इत्यस्य चर्चा श्रूयते। अस्य पदस्य कः भावः इति मनसि जिज्ञासा उत्पद्यते। कालपरिवर्तनेन सह मानवस्य आवश्यकताऽपि परिवर्तते। प्राचीनकाले ज्ञानस्य आदान-प्रदानं मौखिकम् आसीत्, विद्या च श्रुतिपरम्परया गृह्यते स्म। अनन्तरं तालपत्रोपरि भोजपत्रोपरि च लेखनकार्यम् आरब्धम्। परवर्तिनि काले कर्गदस्य लेखन्याः च आविष्कारेण सर्वेषामेव मनोगतानां भावानां कर्गदोपरि लेखनं प्रारब्धम्। टङ्कणयन्त्रस्य आविष्कारेण तु लिखिता सामग्री टङ्किता सती बहुकालाय सुरक्षिता अतिष्ठत्। वैज्ञानिकप्रविधेः प्रगतियात्रा पुनरपि अग्रे गता। अद्य सर्वाणि कार्याणि सङ्गणकनामकेन यन्त्रेण साधितानि भवन्ति। समाचार-पत्राणि, पुस्तकानि च कम्प्यूटरमाध्यमेन पठ्यन्ते लिख्यन्ते च। कर्गदोद्योगे वृक्षाणाम् उपयोगेन वृक्षाः कर्त्यन्ते स्म, परम् सङ्गणकस्य अधिकाधिक-प्रयोगेण वृक्षाणां कर्तने न्यूनता भविष्यति इति विश्वासः। अनेन पर्यावरणसुरक्षायाः दिशि महान् उपकारो भविष्यति।

अधुना आपणे वस्तुक्रयार्थम् रूप्यकाणाम् अनिवार्यता नास्ति। "डेबिट कार्ड", "क्रेडिट कार्ड" इत्यादयः सर्वत्र रूप्यकाणां स्थानं गृहीतवन्तः। वित्तकोशस्य (बैंकस्य) चापि सर्वाणि कार्याणि सङ्गणकयन्त्रेण सम्पाद्यन्ते। बहुविधाः अनुप्रयोगाः (*APP*) मुद्राहीनाय विनिमयाय (*Cashless Transaction*) सहायकाः सन्ति।

कुत्रापि यात्रा करणीया भवेत् रेलयानयात्रापत्रस्य, वायुयानयात्रापत्रस्य अनिवार्यता अद्य नास्ति। सर्वाणि पत्राणि अस्माकं चलदूरभाषयन्त्रे 'ई-मेल' इति स्थाने सुरक्षितानि भवन्ति यानि सन्दर्श्य वयं सौकर्येण यात्रायाः आनन्दं गृह्णीमः। चिकित्सालयेऽपि उपचारार्थं रूप्यकाणाम् आवश्यकताद्य नानुभूयते। सर्वत्र कार्डमाध्यमेन, ई-बैंकमाध्यमेन शुल्कं प्रदातुं शक्यते।

तद्दिनं नातिदूरम् यदा वयम् हस्ते एकमात्रं चलदूरभाषयन्त्रमादाय सर्वाणि कार्याणि साधयितुं समर्थाः भविष्यामः। वस्त्रपुटके रूप्यकाणाम् आवश्यकता न भविष्यति। 'पास्बुक' चैक्बुक' इत्यनयोः आवश्यकता न भविष्यति। पठनार्थं पुस्तकानां समाचारपत्राणाम् अनिवार्यता समाप्तप्राया भविष्यति। लेखनार्थम् अभ्यासपुस्तिकायाः कर्गदस्य वा, नूतनज्ञानान्वेषणार्थं शब्दकोशस्याऽपि आवश्यकता न भविष्यति। अपरिचित-मार्गस्य ज्ञानार्थं मार्गदर्शकस्य मानचित्रस्य आवश्यकतायाः अनुभूतिः अपि न भविष्यति। एतत् सर्वं एकेनेव यन्त्रेण कर्तुं, शक्यते।

शाकादिक्रयार्थम्, फलक्रयार्थम्, विश्रामगृहेषु कक्षं सुनिश्चितं कर्तुं, चिकित्सालये शुल्कं प्रदातुम्, विद्यालये महाविद्यालये चापि शुल्कं प्रदातुम्, किं बहुना दानमपि दातुं चलदूरभाषयन्त्रमेव अलम्। डिजीभारतम् इति अस्यां दिशि वयं भारतीयाः द्रुतगत्या अग्रेसरामः।

जिज्ञासा	–	जानने की इच्छा
उत्पद्यते	–	उत्पन्न होता है/होती है
परवर्तिनि काले	–	परिवर्तन के समय में
अनन्तरम्	–	बाद में
कर्गदस्य	–	कागज़ का
प्रविधिः	–	तकनीक, विधि
चलदूरभाषयन्त्रम्	–	मोबाइल फोन
रेलयानयात्रापत्रम्	–	रेल टिकट
वायुयानयात्रापत्रम्	–	हवाई जहाज का टिकट
सौकर्येण	–	आसानी से, सुगमता से
सन्दर्श्य	–	दिखलाकर
चिकित्सालयः	–	अस्पताल
वस्त्रपुटके	–	जेब में
द्रुतगत्या	–	तीव्र गति से
शुल्कम्	–	फ़ीस

अभ्यासः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-**

(क) कुत्र "डिजिटल इण्डिया" इत्यस्य चर्चा भवति?

(ख) केन सह मानवस्य आवश्यकता परिवर्तते?

(ग) आपणे वस्तूनां क्रयसमये केषाम् अनिवार्यता न भविष्यति?

(घ) कस्मिन् उद्योगे वृक्षाः उपयुज्यन्ते?

(ङ) अद्य सर्वाणि कार्याणि केन साधितानि भवन्ति?

2. अधोलिखितान् प्रश्नान् पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) प्राचीनकाले विद्या कथं गृह्यते स्म?

(ख) वृक्षाणां कर्तनं कथं न्यूनतां यास्यति?

(ग) चिकित्सालये कस्य आवश्यकता अद्य नानुभूयते?

(घ) वयं कस्यां दिशि अग्रेसरामः?

(ङ) वस्त्रपुटके केषाम् आवश्यकता न भविष्यति?

3. रेखाङ्कितपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) भोजपत्रोपरि लेखनम् आरब्धम्।

(ख) लेखनार्थं कर्गदस्य आवश्यकतायाः अनुभूतिः न भविष्यति।

(ग) विश्रामगृहेषु कक्षं सुनिश्चितं भवेत्।

(घ) सर्वाणि पत्राणि चलदूरभाषयन्त्रे सुरक्षितानि भवन्ति

(ङ) वयम् उपचारार्थं चिकित्सालयं गच्छामः?

4. उदाहरणमनुसृत्य विशेषण विशेष्यमेलनं कुरुत-

यथा - विशेषण	विशेष्य
सम्पूर्णे	भारते
(क) मौखिकम्	(1) ज्ञानम्
(ख) मनोगताः	(2) उपकारः
(ग) महान्	(3) भावाः

(घ) टङ्किता (4) विनिमयः
(ङ) मुद्राविहीनः (5) सामग्री

5. **अधोलिखितपदयोः सन्धिं कृत्वा लिखत-**

पदस्य + अस्य
तालपत्र + उपरि
च + अतिष्ठत
कर्गद + उद्योगे
क्रय + अर्थम्
इति + अनयोः
उपचार + अर्थम्

6. **उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितेन पदेन लघु वाक्य निर्माणं कुरुत-**

यथा - जिज्ञासा - मम मनसि वैज्ञानिकानां विषये जिज्ञासा अस्ति
(क) आवश्यकता -
(ख) सामग्री -
(ग) पर्यावरण सुरक्षा -
(घ) विश्रामगृहम् -

7. **उदाहरणानुसारम् कोष्ठकप्रदत्तेषु पदेषु चतुर्थी प्रयुज्य रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत-**

यथा – भिक्षुकाय धनं ददातु। (भिक्षुक)
(क) .... पुस्तकं देहि। (छात्र)
(ख) अहम् .... वस्त्राणि ददामि। (निर्धन)
(ग) .... पठनं रोचते। (लता)

(ङ) रमेशः .... अलम्। (सुरेश)

(च) .... नमः। (अध्यापक)

योग्यता-विस्तारः

इन्टरनेट - ज्ञान का महत्त्वपूर्ण स्रोत है

इन्टरनेट के माध्यम से किसी भी विषय की जानकारी सरलतापूर्वक मिल सकती है। सिर्फ एक "क्लिक" द्वारा ज्ञान के विभिन्न आयामों को छुआ जा सकता है। यह ज्ञान का सागर है जिसमें एक बैक्टीरिया जैसे सूक्ष्म जीवाणु से लेकर ब्लैकहोल तक, राजनीति से लेकर व्यापार तक, अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों से लेकर वैज्ञानिक चरमोत्कर्ष तक की सूचना प्राप्त हो जाती है। सामान्यतः हमें किसी भी जानकारी के लिए पुस्तकालय तक जाने की आवश्यकता होती है, पर अब हम घर बैठे उसे प्राप्त कर सकते हैं। यह एक सामाजिक प्लेटफार्म है जहाँ हम दुनियाँ के किसी भी कोने में बैठे लोगों से किसी भी विषय पर विचार विमर्श कर सकते हैं। इस पर ईमेल सुविधा, वीडियो कॉलिंग आदि आसानी से उपलब्ध है। ऑनलाइन दूरस्थ शिक्षा (*Online Distance Education*) के माध्यम से लोग घर बैठे अपना पाठ्यक्रम पूरा कर सकते हैं। यह मनोरंजन का मुफ़्त साधन है। इसकी *Navigation facility* हमें एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने में सक्षम है। इसकी कभी छुट्टी नहीं होती। यह हमें 24 ×7 उपलब्ध है।

1. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द-

ज्ञातुम् इच्छा - जिज्ञासा - जानने की इच्छा

कर्तुम् इच्छा - चिकीर्षा - करने की इच्छा

पातुम् इच्छा - पिपासा - पीने की इच्छा

भोक्तुम् इच्छा – बुभुक्षा – खाने की इच्छा

जीवितुम् इच्छा – जिजीविषा – जीने की इच्छा

गन्तुम् इच्छा – जिगमिषा – जाने की इच्छा

2. "तुमुन्" प्रत्यय में 'तुम्' शेष बचता है। यह प्रत्यय के लिए अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे –

कृ + तुमुन् – कर्तुम् – करने के लिए

दा + तुमुन् – दातुम् – देने के लिए

खाद् + तुमुन् – खादितुम्– खाने के लिए

पठ् + तुमुन् – पठितुम् – पढ़ने के लिए

लिख् + तुमुन् – लिखितुम्– लिखने के लिए

गम् + तुमुन् – गन्तुम् – जाने के लिए

0851CH04

चतुर्थः पाठः

सदैव पुरतो निधेहि चरणम्

[श्रीधरभास्कर वर्णेकर द्वारा विरचित प्रस्तुत गीत में चुनौतियों को स्वीकार करते हुए आगे बढ़ने का आह्वान किया गया है। इसके प्रणेता राष्ट्रवादी कवि हैं और इस गीत के द्वारा उन्होंने जागरण तथा कर्मठता का सन्देश दिया है।]

चल चल पुरतो निधेहि चरणम्।
सदैव पुरतो निधेहि चरणम्।।

गिरिशिखरे ननु निजनिकेतनम्।
विनैव यानं नगारोहणम्।।
बलं स्वकीयं भवति साधनम्।
सदैव पुरतो ....।।

पथि पाषाणाः विषमाः प्रखराः।
हिंस्राः पशवः परितो घोराः।।
सुदुष्करं खलु यद्यपि गमनम्।
सदैव पुरतो ....।।

जहीहि भीतिं भज-भज शक्तिम्।
विधेहि राष्ट्रे तथाऽनुरक्तिम्।।
कुरु कुरु सततं ध्येय-स्मरणम्।
सदैव पुरतो ....।।

पुरतो (पुरतः)	–	आगे
निधेहि	–	रखो
गिरिशिखरे	–	पर्वत की चोटी पर
निजनिकेतनम्	–	अपना निवास
विनैव (विना+एव)	–	बिना ही
नगारोहणम् (नग+आरोहणम्)	–	पर्वत पर चढ़ना
स्वकीयम्	–	अपना
पथि	–	मार्ग में
पाषाणाः	–	पत्थर
विषमाः	–	असामान्य
प्रखराः	–	तीक्ष्ण, नुकीले
हिंस्राः	–	हिंसक
परितो (परितः)	–	चारों ओर
घोराः	–	भयङ्कर, भयानक
सुदुष्करम्	–	अत्यन्त कठिनतापूर्वक साध्य
जहीहि	–	छोड़ो/छोड़ दो
भज	–	भजो, जपो
विधेहि	–	करो
अनुरक्तिम्	–	प्रेम, स्नेह
सततम्	–	लगातार
ध्येयस्मरणम्	–	उद्देश्य (लक्ष्य) का स्मरण

सदैव पुरतो निधेहि चरणम्

अभ्यासः

1. पाठे दत्तं गीतं सस्वरं गायत।

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

(क) स्वकीयं साधनं किं भवति?

(ख) पथि के विषमाः प्रखराः?

(ग) सततं किं करणीयम्?

(घ) एतस्य गीतस्य रचयिता कः?

(ङ) स कीदृशः कविः मन्यते?

3 मञ्जूषातः क्रियापदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

निधेहि	विधेहि	जहीहि	देहि	भज	चल	कुरु

यथा-त्वं पुरतः चरणं निधेहि।

(क) त्वं विद्यालयं ....।

(ख) राष्ट्रे अनुरक्तिं ....।

(ग) मह्यं जलं ....।

(घ) मूढ! .... धनागमतृष्णाम्।

(ङ) .... गोविन्दम्।

(च) सततं ध्येयस्मरणं .... ।

4. (अ) उचितकथनानां समक्षम् 'आम्', अनुचितकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत-

यथा-पुरतः चरणं निधेहि। आम्

(क) निजनिकेतनं गिरिशिखरे अस्ति। ☐

(ख) स्वकीयं बलं बाधकं भवति। ☐

(ग) पथि हिंस्राः पशवः न सन्ति। ☐

(घ) गमनं सुकरम् अस्ति। ☐

(ङ) सदैव अग्रे एव चलनीयम्। ☐

(आ) वाक्यरचनया अर्थभेदं स्पष्टीकुरुत-

परितः	–	पुरतः
नगः	–	नागः
आरोहणम्	–	अवरोहणम्
विषमाः	–	समाः

5. मञ्जूषातः अव्ययपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

एव	खलु	तथा	परितः	पुरतः	सदा	विना

(क) विद्यालयस्य .... एकम् उद्यानम् अस्ति।

(ख) सत्यम् .... जयते।

(ग) किं भवान् स्नानं कृतवान् .... ?

(घ) सः यथा चिन्तयति .... आचरति।

सदैव पुरतो निधेहि चरणम्

(ङ) ग्रामं .... वृक्षाः सन्ति।

(च) विद्यां .... जीवनं वृथा।

(छ) .... भगवन्तं भज।

6. विलोमपदानि योजयत-

पुरतः	विरक्तिः
स्वकीयम्	आगमनम्
भीतिः	पृष्ठतः
अनुरक्तिः	परकीयम्
गमनम्	साहसः

7. (अ) लट्लकारपदेभ्यः लोट्-विधिलिङ्लकारपदानां निर्माणं कुरुत-

लट्लकारे	लोट्लकारे	विधिलिङ्लकारे
यथा-पठति	पठतु	पठेत्
खेलसि	....	....
खादन्ति	....	....
पिबामि	....	....
हसतः	....	....
नयामः	....	....

(आ) अधोलिखितानि पदानि निर्देशानुसारं परिवर्तयत-

यथा - गिरिशिखर (सप्तमी-एकवचने) - गिरिशिखरे

पथिन् (सप्तमी-एकवचने) - ....

राष्ट्र (चतुर्थी-एकवचने) - ....

पाषाण (सप्तमी-एकवचने) - ....

यान (द्वितीया-बहुवचने) - ....

शक्ति (प्रथमा-एकवचने) - ....

पशु (सप्तमी-बहुवचने) - ....

योग्यता-विस्तारः

भावविस्तारः

डॉ. श्रीधरभास्कर वर्णेकर (1918-2005 ई.) नागपुर विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष थे। उन्होंने संस्कृत भाषा में काव्य, नाटक, गीत इत्यादि विधाओं की अनेक रचनाएँ कीं। तीन खण्डों में *संस्कृत-वाङ्मय-कोश* का भी उन्होंने सम्पादन किया। इनकी रचनाओं में 'शिवराज्योदयम्' महाकाव्य एवं 'विवेकानन्दविजयम्' नाटक सुप्रसिद्ध हैं।

प्रस्तुत गीत में पज्झटिका छन्द का प्रयोग है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। हिन्दी में इसे चौपाई कहा जाता है।

भाषाविस्तारः

न गच्छति इति नगः। पतन् गच्छतीति पन्नगः।

उरसा गच्छतीति उरगः। वसु धारयतीति वसुधा।

खे (आकाशे) गच्छति इति खगः। सरतीति सर्पः।

0851CH05

पञ्चमः पाठः

कण्टकेनैव कण्टकम्

[मध्यप्रदेश के डिण्डोरी ज़िले में परधानों के बीच प्रचलित एक लोककथा है। यह पञ्चतन्त्र की शैली में रचित है। इस कथा में यह स्पष्ट किया गया है कि संकट में चतुराई एवं प्रत्युत्पन्नमतित्व से बाहर निकला जा सकता है।]

आसीत् कश्चित् चञ्चलो नाम व्याधः। पक्षिमृगादीनां ग्रहणेन सः स्वीयां जीविकां निर्वाहयति स्म।। एकदा सः वने जालं विस्तीर्य गृहम् आगतवान्। अन्यस्मिन् दिवसे प्रातःकाले यदा चञ्चलः वनं गतवान् तदा सः दृष्टवान् यत् तेन विस्तारिते जाले दौर्भाग्याद् एकः व्याघ्रः बद्धः आसीत्। सोऽचिन्तयत्, 'व्याघ्रः मां खादिष्यति अतएव पलायनं करणीयम्।' व्याघ्रः न्यवेदयत्–'भो मानव! कल्याणं भवतु ते। यदि त्वं मां मोचयिष्यसि तर्हि अहं त्वां न हनिष्यामि।' तदा सः व्याधः व्याघ्रं जालात् बहिः निरसारयत्। व्याघ्रः क्लान्तः आसीत्। सोऽवदत्, 'भो मानव! पिपासुः अहम्। नद्याः जलमानीय मम पिपासां शमय। व्याघ्रः जलं पीत्वा पुनः

व्याधमवदत्, 'शान्ता मे पिपासा। साम्प्रतं बुभुक्षितोऽस्मि। इदानीम् अहं त्वां खादिष्यामि।' चञ्चलः उक्तवान्, 'अहं त्वत्कृते धर्मम् आचरितवान्। त्वया मिथ्या भणितम्। त्वं मां खादितुम् इच्छसि?

व्याघ्रः अवदत्, 'अरे मूर्ख! क्षुधार्ताय किमपि अकार्यम् न भवति। सर्वः स्वार्थं समीहते।'

चञ्चलः नदीजलम् अपृच्छत्। नदीजलम् अवदत्, 'एवमेव भवति, जनाः मयि स्नानं कुर्वन्ति, वस्त्राणि प्रक्षालयन्ति तथा च मल-मूत्रादिकं विसृज्य निवर्तन्ते, वस्तुतः सर्वः स्वार्थं समीहते।

चञ्चलः वृक्षम् उपगम्य अपृच्छत्। वृक्षः अवदत्, 'मानवाः अस्माकं छायायां विरमन्ति। अस्माकं फलानि खादन्ति, पुनः कुठारैः प्रहृत्य अस्मभ्यं सर्वदा कष्टं ददति। यत्र कुत्रापि छेदनं कुर्वन्ति। सर्वः स्वार्थं समीहते।'

समीपे एका लोमशिका बदरी-गुल्मानां पृष्ठे निलीना एतां वार्तां शृणोति स्म। सा सहसा चञ्चलमुपसृत्य कथयति-"का वार्ता? माम् अपि विज्ञापय।" सः अवदत्-"अहह मातृस्वसः! अवसरे त्वं समागतवती। मया अस्य व्याघ्रस्य प्राणाः रक्षिताः, परम् एषः मामेव खादितुम् इच्छति।" तदनन्तरं सः लोमशिकायै निखिलां कथां न्यवेदयत्।

लोमशिका चञ्चलम् अकथयत्-बाढम्, त्वं जालं प्रसारय। पुनः सा व्याघ्रम्

अवदत्-केन प्रकारेण त्वम् एतस्मिन् जाले बद्धः इति अहं प्रत्यक्षं द्रष्टुमिच्छामि। व्याघ्रः तद् वृत्तान्तं प्रदर्शयितुं तस्मिन् जाले प्राविशत्। लोमशिका पुनः अकथयत्-सम्प्रति पुनः पुनः कूर्दनं कृत्वा दर्शय। सः तथैव समाचरत्। अनारतं कूर्दनेन सः श्रान्तः अभवत्। जाले बद्धः सः व्याघ्रः क्लान्तः सन् निःसहायो भूत्वा तत्र अपतत् प्राणभिक्षामिव च अयाचत। लोमशिका व्याघ्रम् अवदत् सत्यं त्वया भणितम् 'सर्वः स्वार्थं समीहते।'

शब्दार्थाः

व्याधः	–	शिकारी, बहेलिया
स्वीयाम्	–	स्वयं की
दौर्भाग्यात्	–	दुर्भाग्य से
बद्धः	–	बँधा हुआ
पलायनम्	–	पलायन करना, भाग जाना
न्यवेदयत् (नि+अवेदयत्)	–	निवेदन किया
मोचयिष्यसि	–	मुक्त करोगे/छुड़ाओगे
निरसारयत् (निः+असारयत्)	–	निकाला
क्लान्तः	–	थका हुआ

पिपासुः – प्यासा

शमय – शान्त करो/मिटाओ

बुभुक्षितः – भूखा

भणितम् – कहा

प्रक्षालयन्ति – धोते हैं

विसृज्य – छोड़कर

निवर्तन्ते – चले जाते हैं/लौटते हैं

उपगम्य – पास जाकर

विरमन्ति – विश्राम करते हैं

कुठारैः – कुल्हाड़ियों से

प्रहृत्य – प्रहार करके

छेदनम् – काटना

लोमशिका – लोमड़ी

निलीना – छुपी हुई

उपसृत्य – समीप जाकर

मातृस्वसः! – हे मौसी

समागतवती – पधारी/आई

निखिलाम् – सम्पूर्ण, पूरी

बाढम् – ठीक है, अच्छा

प्रत्यक्षम् – अपने (समक्ष) सामने

वृत्तान्तम्	–	पूरी कहानी
प्रदर्शयितुम्	–	प्रदर्शन करने के लिए
प्राविशत् (प्र+अविशत्)	–	प्रवेश किया
कूर्दनम्	–	उछल-कूद
अनारतम्	–	लगातार
श्रान्तः	–	थका हुआ
प्रत्यावर्तत (प्रति+आ+अवर्तत)	–	लौट आया

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत–

(क) व्याधस्य नाम किम् आसीत्?

(ख) चञ्चलः व्याघ्रं कुत्र दृष्टवान्?

(ग) कस्मै किमपि अकार्यं न भवति।

(घ) बदरी-गुल्मानां पृष्ठे का निलीना आसीत्?

(ङ) सर्वः किं समीहते?

(च) निःसहायो व्याधः किमयाचत?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) चञ्चलेन वने किं कृतम्?

(ख) व्याघ्रस्य पिपासा कथं शान्ता अभवत्?

(ग) जलं पीत्वा व्याघ्रः किम् अवदत्?

(घ) चञ्चलः 'मातृस्वसः!' इति कां सम्बोधितवान्?

(ङ) जाले पुनः बद्धं व्याघ्रं दृष्ट्वा व्याधः किम् अकरोत्?

3. अधोलिखितानि वाक्यानि कः/का कं/कां प्रति कथयति-

	कः/का	कं/कां
यथा – इदानीम् अहं त्वां खादिष्यामि।	व्याघ्रः	व्याधम्
(क) कल्याणं भवतु ते।	....	....
(ख) जनाः मयि स्नानं कुर्वन्ति।	....	....
(ग) अहं त्वत्कृते धर्मम् आचरितवान् त्वया मिथ्या भणितम्।	....	....
(घ) यत्र कुत्रापि छेदनं कुर्वन्ति।	....	....
(ङ) सम्प्रति पुनः पुनः कूर्दनं कृत्वा दर्शय।	....	....

4. रेखांकित पदमाधृत्य प्रश्ननिर्माण-

(क) व्याधः व्याघ्रं जालात् बहिः निरसारयत्।

(ख) चञ्चलः वृक्षम् उपगम्य अपृच्छत्।

(ग) व्याघ्रः लोमशिकायै निखिलां कथां न्यवेदयत्।

(घ) मानवाः वृक्षाणां छायायां विरमन्ति।

(ङ) व्याघ्रः नद्याः जलेन व्याधस्य पिपासामशमयत्।

5. मञ्जूषातः पदानि चित्वा कथां पूरयत-

वृद्धः	साट्टहासम्	मोचयितुम्	क्षुद्रः	तर्हि
अकस्मात्	कृतवान्	कर्तनम्	स्वकीयैः	दृष्ट्वा

एकस्मिन् वने एकः .... व्याघ्रः आसीत्। सः एकदा व्याधेन विस्तारिते जाले बद्धः अभवत्। सः बहुप्रयासं .... किन्तु जालात् मुक्तः नाभवत्। .... तत्र एकः मूषकः समागच्छत्। बद्धं व्याघ्रं .... सः तम् अवदत्–अहो! भवान् जाले बद्धः। अहं त्वां .... इच्छामि। तच्छ्रुत्वा व्याघ्रः ....अवदत्–अरे! त्वं

.... जीवः मम साहाय्यं करिष्यसि। यदि त्वं मां मोचयिष्यसि ....अहं त्वां न हनिष्यामि। मूषकः .... लघुदन्तैः तज्जालस्य .... कृत्वा तं व्याघ्रं बहिः कृतवान्।

6. यथानिर्देशमुत्तरत–

(क) सः लोमशिकायै सर्वां कथां न्यवेदयत् – अस्मिन् वाक्ये विशेषणपदं किम्?

(ख) अहं त्वत्कृते धर्मम् आचरितवान् – अत्र अहम् इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ग) 'सर्वः स्वार्थं समीहते', अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किम्?

(घ) सा सहसा चञ्चलमुपसृत्य कथयति – वाक्यात् एकम् अव्ययपदं चित्वा लिखत।

(ङ) 'का वार्ता? माम् अपि विज्ञापय' – अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम्? क्रियापदस्य पदपरिचयमपि लिखत।

7. (अ) उदाहरणानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत–

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा– मातृ (प्रथमा)	माता	मातरौ	मातरः
स्वसृ (प्रथमा)	....	....	....
मातृ (तृतीया)	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
स्वसृ (तृतीया)	....	....	....
स्वसृ (सप्तमी)	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
मातृ (सप्तमी)	....	....	....
स्वसृ (षष्ठी)	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसृणाम्
मातृ (षष्ठी)	....	....	....

(आ) धातुं प्रत्ययं च लिखत-

पदानि	=	धातुः		प्रत्ययः
यथा- गन्तुम्	=	गम्	+	तुमुन्
द्रष्टुम्	=	....	+	....
करणीयम्	=	....	+	....
पातुम्	=	....	+	....
खादितुम्	=	....	+	....
कृत्वा	=	....	+	....

योग्यता-विस्तारः

परधान और उनकी कलापरम्परा–परधान मुख्यतः गौंड राजाओं की वंशावली और कथा के गायक थे। गौंड राज्य के समाप्त होने पर ये गायक अपनी गायी जाने वाली कथाओं पर चित्र बनाने लगे। इस समुदाय की कथाओं और चित्रकला के बारे में और अधिक जानने के लिए पुस्तक 'जनगढ़ कलम' (वन्या प्रकाशन, भोपाल) देखी जा सकती है। प्रस्तुत कथा के संकलन-कर्ता हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री उदयन वाजपेयी हैं।

लोककथाओं में जीवन की रंग-बिरंगी तस्वीर मिलती है। दिलचस्प बात यह है कि लोककथाएँ किसी एक भाषा या इलाके तक सीमित नहीं रहतीं। उन्हें कहने वाले जगह-जगह घूमते हैं इसलिए रूप और वर्णन में हेर-फेर के साथ दूसरी जगहों में भी मिल जाती हैं। क्षेत्र विशेष की संस्कृति की झलक उनको अनूठा बनाती है। स्थान और काल के अनुसार लोककथाओं की नई-नई व्याख्याएँ होती रहती हैं। इस क्रम में उनमें परिवर्तन भी होता है।

षष्ठः पाठः

गृहं शून्यं सुतां विना

[यह पाठ कन्याओं की हत्या पर रोक और उनकी शिक्षा सुनिश्चित करने की प्रेरणा हेतु निर्मित है। समाज में लड़के और लड़कियों के बीच भेद-भाव की भावना आज भी समाज में यत्र-तत्र देखी जाती है। जिसे दूर किए जाने की आवश्यकता है। संवादात्मक शैली में इस बात को सरल संस्कृत में प्रस्तुत किया गया है।]

"शालिनी ग्रीष्मावकाशे पितृगृहम् आगच्छति। सर्वे प्रसन्नमनसा तस्याः स्वागतं कुर्वन्ति परं तस्याः भ्रातृजाया उदासीना इव दृश्यते"

शालिनी– भ्रातृजाये! चिन्तिता इव प्रतीयसे, सर्वं कुशलं खलु?

माला – आम् शालिनि! कुशलिनी अहम्। त्वदर्थं किम् आनयानि, शीतलपेयं चायं वा?

शालिनी– अधुना तु किमपि न वाञ्छामि। रात्रौ सर्वैः सह भोजनमेव करिष्यामि।

(भोजनकालेऽपि मालायाः मनोदशा स्वस्था न प्रतीयते स्म, परं सा मुखेन किमपि नोक्तवती)

राकेशः– भगिनि शालिनि! दिष्ट्या त्वं समागता। अद्य मम कार्यालये एका महत्त्वपूर्णा गोष्ठी सहसैव निश्चिता। अद्यैव मालायाः चिकित्सिकया सह मेलनस्य समयः निर्धारितः त्वं मालया सह चिकित्सिकां प्रति गच्छ, तस्याः परामर्शानुसारं यद्विधेयं तद् सम्पादय।

शालिनी– किमभवत्? भ्रातृजायायाः स्वास्थ्यं समीचीनं नास्ति? अहं तु ह्यः प्रभृति पश्यामि सा स्वस्था न प्रतिभाति इति प्रतीयते स्म।

राकेशः– चिन्तायाः विषयः नास्ति। त्वं मालया सह गच्छ। मार्गे सा सर्वं ज्ञापयिष्यति।

(माला शालिनी च चिकित्सिकां प्रति गच्छन्त्यौ वार्तां कुरुतः)

शालिनी– किमभवत्? भ्रातृजाये! का समस्याऽस्ति?

माला–शालिनि! अहं मासत्रयस्य गर्भं स्वकुक्षौ धारयामि। तव भ्रातुः आग्रहः अस्ति यत् अहं लिङ्गपरीक्षणं कारयेयं कुक्षौ कन्याऽस्ति चेत् गर्भं पातयेयम्। अहम् अतीव उद्विग्नाऽस्मि परं तव भ्राता वार्तामेव न शृणोति।

शालिनी– भ्राता एवं चिन्तयितुमपि कथं प्रभवति? शिशुः कन्याऽस्ति चेत् वधार्हा? जघन्यं कृत्यमिदम्। त्वम् विरोधं न कृतवती? सः तव शरीरे स्थितस्य शिशोः वधार्थं चिन्तयति त्वम् तूष्णीम् तिष्ठसि? अधुनैव गृहं चल, नास्ति आवश्यकता लिङ्गपरीक्षणस्य। भ्राता यदा गृहम् आगमिष्यति अहम् वार्तां करिष्ये।

(सन्ध्याकाले भ्राता आगच्छति हस्तपादादिकं प्रक्षाल्य वस्त्राणि च परिवर्त्य पूजागृहं गत्वा दीपं प्रज्वालयति भवानीस्तुतिं चापि करोति। तदनन्तरं चायपानार्थम् सर्वेऽपि एकत्रिताः।)

राकेशः– माले! त्वं चिकित्सिकां प्रति गतवती आसीः, किम् अकथयत् सा?

(माला मौनमेवाश्रयति। तदैव क्रीडन्ती त्रिवर्षीया पुत्री अम्बिका पितुः क्रोडे उपविशति तस्मात् चाकलेहं च याचते। राकेशः अम्बिकां लालयति, चाकलेहं प्रदाय तां क्रोडात् अवतारयति। पुनः मालां प्रति प्रश्नवाचिकां दृष्टिं क्षिपति। शालिनी एतत् सर्वं दृष्ट्वा उत्तरं ददाति)

शालिनी– भ्रातः! त्वं किं ज्ञातुमिच्छसि? तस्याः कुक्षि पुत्रः अस्ति पुत्री वा? किमर्थम्? षण्मासानन्तरं सर्वं स्पष्टं भविष्यति, समयात् पूर्वं किमर्थम् अयम् आयासः?

राकेशः– भगिनि, त्वं तु जानासि एव अस्माकं गृहे अम्बिका पुत्रीरूपेण अस्त्येव अधुना एकस्य पुत्रस्य आवश्यकताऽस्ति तर्हि.......

शालिनी– तर्हि कुक्षि पुत्री अस्ति चेत् हन्तव्या? (तीव्रस्वरेण) हत्यायाः पापं कर्तुं प्रवृत्तोऽसि त्वम्।

राकेशः– न, हत्या तु न.........

शालिनी– तर्हि किमस्ति निर्घृणं कृत्यमिदम्? सर्वथा विस्मृतवान् अस्माकं जनकः कदापि पुत्रीपुत्रयोः विभेदं न कृतवान्? सः सर्वदैव मनुस्मृतेः पंक्तिमिमाम् उद्धरति स्म "आत्मा वै जायते पुत्रः पुत्रेण दुहिता समा"। त्वमपि सायं प्रातः देवीस्तुतिं करोषि? किमर्थं सृष्टेः उत्पादिन्याः शक्त्याः तिरस्कारं करोषि? तव मनसि इयती कुत्सिता वृत्तिः आगता, इदं चिन्तयित्वैव अहं कुण्ठिताऽस्मि। तव शिक्षा वृथा......

राकेशः– भगिनि! विरम विरम। अहं स्वापराधं स्वीकरोमि लज्जितश्चास्मि। अद्यप्रभृति कदापि गर्हितमिदं कार्यं स्वप्नेऽपि न चिन्तयिष्यामि। यथैव अम्बिका मम हृदयस्य सम्पूर्णस्नेहस्य अधिकारिणी अस्ति, तथैव आगन्ता शिशुः अपि स्नेहाधिकारी भविष्यति पुत्रः भवतु पुत्री वा। अहं स्वगर्हितचिन्तनं प्रति पश्चात्तापमग्नः अस्मि, अहं कथं विस्मृतवान्

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैताः न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।"

अथवा "पितुर्दशगुणा मातेति।" त्वया सन्मार्गः प्रदर्शितः भगिनि। कनिष्ठाऽपि त्वं मम गुरुरसि।

शालिनी– अलं पश्चात्तापेन। तव मनसः अन्धकारः अपगतः प्रसन्नतायाः विषयोऽयम्। भ्रातृजाये! आगच्छ। सर्वां चिन्तां त्यज आगन्तुः शिशोः स्वागताय च सन्नद्धा भव। भ्रातः त्वमपि प्रतिज्ञां कुरु – कन्यायाः रक्षणे, तस्याः पाठने दत्तचित्तः स्थास्यसि "पुत्रीं रक्ष, पुत्रीं

पाठय" इतिसर्वकारस्य घोषणेयं तदैव सार्थिका भविष्यति यदा वयं सर्वे मिलित्वा चिन्तनमिदं यथार्थरूपं करिष्यामः–

या गार्गी श्रुतचिन्तने नृपनये पाञ्चालिका विक्रमे,
लक्ष्मीः शत्रुविदारणे गगनं विज्ञानाङ्गणे कल्पना।
इन्द्रोद्योगपथे च खेलजगति ख्याताभितः साइना,
सेयं स्त्री सकलासु दिक्षु सबला सर्वैः सदोत्साह्यताम्।।

भ्रातृजाया	–	भाभी
वाञ्छामि	–	चाहता हूँ/चाहती हूँ
सह	–	साथ
दिष्ट्या	–	भाग्य से
ह्यः	–	कल
सार्द्धम्	–	साथ
उभे	–	दोनों
कुक्षौ	–	कोख में
उद्विग्ना	–	चिन्तित
वधार्हा	–	वध के योग्य
क्रोडे	–	गोदी में
आयासः	–	प्रयास
निर्घृणम्	–	घृणा योग्य
दुहिता	–	पुत्री
निधाय	–	रख कर

गर्हितम्	–	निन्दित
कनिष्ठा	–	छोटी
अपगतः	–	दूर हो गया
सन्नद्धः	–	तैयार
श्रुतचिन्तने	–	तत्त्वों (ज्ञान) के चिन्तन-मनन में
शत्रुविदारणे	–	शत्रुओं को पराजित करने में
सकलासु	–	सभी
दिक्षु	–	दिशाओं में
सबला	–	बल से युक्त
उत्साह्यताम्	–	प्रोत्साहित करें

अभ्यासः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**

(क) दिष्ट्या का समागता?

(ख) राकेशस्य कार्यालये का निश्चिता?

(ग) राकेशः शालिनीं कुत्र गन्तुं कथयति?

(घ) सायंकाले भ्राता कार्यालयात् आगत्य किं करोति?

(ङ) राकेशः कस्याः तिरस्कारं करोति?

(च) शालिनी भ्रातरम् कां प्रतिज्ञां कर्तुं कथयति?

(छ) यत्र नार्यः न पूज्यन्ते तत्र किं भवति?

2. अधोलिखितपदानां संस्कृतरूपं (तत्समरूपं) लिखत–

(क) कोख

(ख) साथ

(ग) गोद

(घ) भाई

(ङ) कुआँ

(च) दूध

3. उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकप्रदत्तेषु पदेषु तृतीयाविभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) मात्रा सह पुत्री गच्छति (मातृ)

(ख) .... विना विद्या न लभ्यते (परिश्रम)

(ग) छात्रः .... लिखति (लेखनी)

(घ) सूरदासः .... अन्धः आसीत् (नेत्र)

(ङ) सः .... साकम् समयं यापयति। (मित्र)

4. 'क' स्तम्भे विशेषणपदं दत्तम् 'ख' स्तम्भे च विशेष्यपदम्। तयोर्मेलनम् कुरुत–

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
(1) स्वस्था	(क) कृत्यम्
(2) महत्वपूर्णा	(ख) पुत्री
(3) जघन्यम्	(ग) वृत्तिः
(4) क्रीडन्ती	(घ) मनोदशा
(5) कुत्सिता	(ङ) गोष्ठी

गृहं शून्यं सुतां विना

5. अधोलिखितानां पदानां विलोमपदं पाठात् चित्वा लिखत–

(क) श्वः

(ख) प्रसन्ना

(ग) वरिष्ठा

(घ) प्रशंसितम्

(ङ) प्रकाशः

(च) सफलाः

(छ) निरर्थकः

6. रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) प्रसन्नतायाः विषयोऽयम्।

(ख) सर्वकारस्य घोषणा अस्ति।

(ग) अहम् स्वापराधं स्वीकरोमि।

(घ) समयात् पूर्वम् आयासं करोषि।

(ङ) अम्बिका क्रोडे उपविशति।

7. अधोलिखिते सन्धिविच्छेदे रिक्त स्थानानि पूरयत–

यथा –	नोक्तवती		न		उक्तवती
	सहसैव	=	सहसा	+	....
	परामर्शानुसारम्	=	....	+	अनुसारम्
	वधार्हा	=	....	+	अर्हा
	अधुनैव	=	अधुना	+	....
	प्रवृत्तोऽपि	=	प्रवृत्तः	+	....

योग्यता-विस्तारः

विभिन्न क्षेत्रों में स्त्री की स्थिति-

प्राचीनकाल में स्त्रियों की स्थिति काफी उन्नत और सुदृढ़ थी। वेद और उपनिषद् काल तक पुरुषों के साथ-साथ स्त्रियों को भी शिक्षित किया जाता था। लवकुश के साथ आत्रेयी के पढ़ने का प्रसंग एक तरफ सहशिक्षा को प्रमाणित करता है, दूसरी तरफ ब्रह्मवादिनी वेदज्ञऋषि गार्गी मैत्रैयी, अरुन्धती आदि की ख्याति इस बात को भी प्रमाणित करती है कि पुरुषों और स्त्रियों के मध्य कोई विभेद नहीं था।

पर बाद के काल में स्त्रियों की स्थिति दयनीय होती गई, जिसमें कुछ सुधार तो हुआ है, पर अभी भी स्त्री शिक्षा को बढ़ाने तथा कन्या जन्म को बाधारहित बनाने के लिए समवेत प्रयास की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर मोदी का "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" अभियान इसी की एक पहल है।

कुछ सफल महिलाएँ-

गायिकाएँ	**साहित्य**	**राजनीति**
एम.एस.सुब्बुलक्ष्मी	सरोजनी नायडू	इन्दिरा गांधी
गंगूबाई हंगल	कमला सुरैया	सुमित्रा महाजन
लता मंगेशकर	शोभाडे	प्रतिभा पटेल
आशा भोंसले	अरुंधती राय	सुषमा स्वराज
	अनीता देसाई	

चित्रकार

आंजोल्नी इला मेनन

खेल		वाणिज्य
पी.टी.ऊषा	कोनेरू हम्पी (शतरंज)	अरुन्धती भट्टाचार्य
जे शोभा (एथलेटिक्स)	सानिया मिर्ज़ा (टेबल टेनिस)	चंदा कोचर
कुंजूरानी देवी (भारोत्तोलन)	कर्णममल्लेश्वरी (भारात्तोलन)	चित्रारामकृष्ण
साइना नेहवाल (बैडमिन्टन)		

भाषिक विस्तार-

* अलम् (व्यर्थ) के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

यथा - पश्चात्तापेन अलम्।

कलहेन अलम्।

विवादेन अलम्।

लज्जया अलम्।

* "साथ" अर्थ वाले शब्दों (सह, साकम्, समम् तथा सार्द्धम्) के साथ भी तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

यथा - सर्वैः साकं भोजनं करिष्यामि।

मालया सार्द्धं गच्छ।

चिकित्सिकया सह मेलनं भविष्यति।

पित्रा सह पुत्रः गच्छति।

मित्रेण सह क्रीडति।

* अव्यय -जिन शब्दों में किसी लिंग किसी विभक्ति अथवा किसी वचन में कोई परिवर्तन नहीं होता उन्हें अव्यय कहते हैं।

पाठ में प्रयुक्त कुछ अव्यय पद –

इव	–	के समान	खलु	–	निश्चय बोधक अव्यय
वा	–	या	अधुना	–	इस समय
अद्य	–	आज	सहसा	–	अचानक
एव	–	ही	ह्यः	–	बीता हुआ कल
श्वः	–	आने वाला कल	यद्	–	जो
तद्	–	वह	चेत्	–	यदि
कथम्	–	कैसे	तूष्णीम्	–	चुपचाप
यदा	–	जब, तदा तब	यदि	–	यदि, तर्हि–तो
वृथा	–	व्यर्थ	अलम्	–	व्यर्थ
किम्	–	क्या	किमर्थम्	–	किस लिए

गृहं शून्यं सुतां विना

0851CH07

सप्तमः पाठः

भारतजनताऽहम्

[प्रस्तुत कविता आधुनिक कविकुलशिरोमणि डॉ. रमाकान्त शुक्ल द्वारा रचित काव्य 'भारतजनताऽहम्' से साभार उद्धृत है। इस कविता में कवि भारतीय जनता के सरोकारों, विविध कौशलों, विविध रुचियों आदि का उल्लेख करते हुए बताते हैं कि भारतीय जनता की क्या-क्या विशेषताएँ हैं।]

अभिमानधना विनयोपेता, शालीना भारतजनताऽहम्।
कुलिशादपि कठिना कुसुमादपि, सुकुमारा भारतजनताऽहम्॥1॥

निवसामि समस्ते संसारे, मन्ये च कुटुम्बं वसुन्धराम्।
प्रेयः श्रेयः च चिनोम्युभयं, सुविवेका भारतजनताऽहम्॥2॥

विज्ञानधनाऽहं ज्ञानधना, साहित्यकला-सङ्गीतपरा।
अध्यात्मसुधातटिनी-स्नानैः, परिपूता भारतजनताऽहम्॥3॥

मम गीतैर्मुग्धं समं जगत्, मम नृत्यैर्मुग्धं समं जगत्।
मम काव्यैर्मुग्धं समं जगत्, रसभरिता भारतजनताऽहम्॥4॥

उत्सवप्रियाऽहं श्रमप्रिया, पदयात्रा-देशाटन-प्रिया।
लोकक्रीडासक्ता वर्धेऽतिथिदेवा, भारतजनताऽहम्॥5॥

मैत्री मे सहजा प्रकृतिरस्ति, नो दुर्बलतायाः पर्यायः।
मित्रस्य चक्षुषा संसारं, पश्यन्ती भारतजनताऽहम्॥6॥

विश्वस्मिन् जगति गताहमस्मि, विश्वस्मिन् जगति सदा दृश्ये।
विश्वस्मिन् जगति करोमि कर्म, कर्मण्या भारतजनताऽहम्॥7॥

अभिमानधना	–	स्वाभिमान रूपी धन वाली
विनयोपेता (विनय+उपेता)	–	विनम्रता से परिपूर्ण
कुलिशादपि (कुलिशात्+अपि)	–	वज्र से भी
कठिना, कठोरा	–	कठोर
कुसुमादपि (कुसुमात्+अपि)	–	फूल से भी
सुकुमारा	–	अत्यंत कोमल
वसुन्धराम्	–	पृथ्वी को
प्रेयः (प्रियकर)	–	अच्छा लगने वाला, रुचिकर
श्रेयः	–	कल्याणकर, कल्याणप्रद
चिनोम्युभयम् (चिनोमि+उभयम्)	–	दोनों को ही चुनती हूँ
अध्यात्मसुधातटिनी-स्नानैः	–	अध्यात्मरूपी अमृतमयी नदी में स्नान से
परिपूता	–	पवित्र
रसभरिता	–	आनंद से परिपूर्ण
आसक्ता	–	अनुराग रखने वाली
प्रकृतिः	–	स्वभाव
कर्मण्या	–	कर्मशील

1. पाठे दत्तानां पद्यानां सस्वरवाचनं कुरुत-

2. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

   (क) अहं वसुन्धरां किं मन्ये?

   (ख) मम सहजा प्रकृति का अस्ति?

   (ग) अहं कस्मात् कठिना भारतजनताऽस्मि?

   (घ) अहं मित्रस्य चक्षुषां किं पश्यन्ती भारतजनताऽस्मि?

3. प्रश्नानाम् उत्तराणि पूर्णवाक्येन लिखत-

   (क) भारतजनताऽहम् कैः परिपूता अस्ति?

   (ख) समं जगत् कथं मुग्धमस्ति?

   (ग) अहं किं किं चिनोमि?

   (घ) अहं कुत्र सदा दृश्ये

   (ङ) समं जगत् कैः कैः मुग्धम् अस्ति?

4. सन्धिविच्छेदं पूरयत-

(क) विनयोपेता	=	विनय	+	उपेता
(ख) कुसुमादपि	=	....	+	....
(ग) चिनोम्युभयम्	=	चिनोमि	+	....
(घ) नृत्यैर्मुग्धम्	=	....	+	मुग्धम्
(ङ) प्रकृतिरस्ति	=	प्रकृतिः	+	....
(च) लोकक्रीडासक्ता	=	लोकक्रीडा	+	....

5. विशेषण-विशेष्य पदानि मेलयत–

विशेषण-पदानि	विशेष्य-पदानि
सुकुमारा	जगत्
सहजा	संसारे
विश्वस्मिन्	भारतजनता
समम्	प्रकृति
समस्ते	जगति

6. समानार्थकानि पदानि मेलयत–

जगति	नदी
कुलिशात्	पृथ्वीम्
प्रकृति	संसारे
चक्षुषा	स्वभावः
तटिनी	वज्रात्
वसुन्धराम्	नेत्रेण

7. उचितकथानां समक्षम् (आम्) अनुचितकथनानां समक्षं च (न) इति लिखत–

(क) अहं परिवारस्य चक्षुषा संसारं पश्यामि।

(ख) समं जगत् मम काव्यैः मुग्धमस्ति।

(ग) अहम् अविवेका भारतजनता अस्मि।

(घ) अहं वसुन्धरां कुटुम्बं न मन्ये।

(ङ) अहं विज्ञानधना ज्ञानधना चास्मि।

योग्यता-विस्तारः

भावविस्तारः

यह कविता आधुनिक कवि डॉ. रमाकान्त शुक्ल के काव्यसंग्रह से ली गई है। डॉ. शुक्ल आधुनिक संस्कृत जगत् में राष्ट्रपति सम्मान तथा पद्मश्री सम्मान से विभूषित मूर्धन्य कवि हैं जिनका काव्य पाठ न केवल भारतीय आकाशवाणी – दूरदर्शन अथवा अन्य विविध कविसम्मेलनों में अपितु मौरिशस-अमेरिका-इटली-यू.के आदि देशों में भी प्रशंसित है। भाति मे भारतम्, जयभारतभूमे, भाति मौरीशसम्, भारतजनताऽहम्, सर्वशुक्ला, सर्वशुक्लोत्तरा, आशाद्विशती, मम जननी तथा राजधानी-रचनाः इनकी महान् काव्य रचनाएँ हैं। इनके अतिरिक्त पण्डितराजीयम् अभिशापम्, पुरश्चरणकमलम्, नाट्यसप्तकम् इत्यादि पुरस्कृत एवं मञ्चित नाट्यरचनाएँ तथा अन्य अनेक सम्पादित ग्रन्थ भी इनकी लेखनी से लब्धप्राण हुए हैं, कवि की कुछ अन्य रचनाएँ भी पढ़िए–

- परिमितशब्दैरमितगुणान्, गायामि कथं ते वद पुण्ये।
  चुलुके जलधिं तुङ्गतरङ्गं करवाणि कथं वद धन्ये।

  जय सुजले सुफले वरदे, विमले कमला-वाणी वन्द्ये।

  जय जय जय हे भारत भूमे जय-जय-जय भारत भूमे।

- यत्र सत्यं शिवं सुन्दरं राजते,
  रामराज्यं च यत्राभवत्पावनम्।

यस्य ताटस्थ्यनीतिः प्रसिद्धिं गता

भूतले भाति तन्मामकं भारतम्।।

- मोदे प्रगतिं दर्शं दर्शं

  वैज्ञानिकीं च भोतिकीं, परम्।

  दूयेऽद्यत्वे लोकं लोकं

  शठचरितं भारत जनताऽहम्।।

- जयन्त्येतेऽस्मदीया गौरवाङ्काः कारगिलवीराः

  समर्च्या आसतेऽस्माकं प्रणम्याः कारगिलवीराः।

  मई-षड्विंशदिवसादैषयो मासद्वयं यावत्,

  अधोषित-पाक-रण-जयिनोऽभिनन्द्याः कारगिलवीराः।।

इत्यादिप्रकारेण विविध-विषयों पर कवि की विविध रचनाएँ हमें प्राप्त होती हैं जिनका रसास्वादन करते हुए पाठक आनन्दित होता है।

0851CH08

अष्टमः पाठः

संसारसागरस्य नायकाः

[प्रस्तुत पाठ अनुपम मिश्र की कृति *आज भी खरे हैं तालाब* के *संसार सागर के नायक* नामक अध्याय से लिया गया है। इसमें विलुप्त होते जा रहे पारम्परिक ज्ञान, कौशल एवं शिल्प के धनी गजधर के सम्बन्ध में चर्चा की गयी है। पानी के लिए मानव निर्मित तालाब, बावड़ी जैसे निर्माणों को लेखक ने यहाँ संसार सागर के रूप में चित्रित किया है।]

के आसन् ते अज्ञातनामानः?

शतशः सहस्रशः तडागाः सहसैव शून्यात् न प्रकटीभूताः। इमे एव तडागाः अत्र संसारसागराः इति। एतेषाम् आयोजनस्य नेपथ्ये निर्मापयितृणाम् एककम्, निर्मातृणां च दशकम् आसीत्। एतत् एककं दशकं च आहत्य शतकं सहस्रं वा रचयतः स्म। परं विगतेषु द्विशतवर्षेषु नूतनपद्धत्या समाजेन यत्किञ्चित् पठितम्। पठितेन तेन समाजेन एककं दशकं सहस्रकञ्च इत्येतानि शून्ये एव परिवर्तितानि। अस्य नूतनसमाजस्य मनसि इयमपि जिज्ञासा नैव उद्भूता यद् अस्मात्पूर्वम् एतावतः तडागान् के रचयन्ति स्म। एतादृशानि कार्याणि कर्तुं ज्ञानस्य यो

नूतनः प्रविधिः विकसितः, तेन प्रविधिनाऽपि पूर्वं सम्पादितम् एतत्कार्यं मापयितुं न केनापि प्रयतितम्।

अद्य ये अज्ञातनामानः वर्तन्ते, पुरा ते बहुप्रथिताः आसन्। अशेषे हि देशे तडागाः निर्मीयन्ते स्म, निर्मातारोऽपि अशेषे देशे निवसन्ति स्म।

गजधरः इति सुन्दरः शब्दः तडागनिर्मातॄणां सादरं स्मरणार्थम्। राजस्थानस्य केषुचिद् भागेषु शब्दोऽयम् अद्यापि प्रचलति। कः गजधरः? यः गजपरिमाणं धारयति स गजधरः। गजपरिमाणम् एव मापनकार्ये उपयुज्यते। समाजे त्रिहस्त- परिमाणात्मिकीं लौहयष्टिं हस्ते गृहीत्वा चलन्तः गजधराः इदानीं शिल्पिरूपेण नैव समादृताः सन्ति। गजधरः, यः समाजस्य गाम्भीर्यं मापयेत् इत्यस्मिन् रूपे परिचितः।

गजधराः वास्तुकाराः आसन्। कामं ग्रामीणसमाजो भवतु नागरसमाजो वा तस्य नव-निर्माणस्य सुरक्षाप्रबन्धनस्य च दायित्वं गजधराः निभालयन्ति स्म। नगरनियोजनात् लघुनिर्माणपर्यन्तं सर्वाणि कार्याणि एतेष्वेव आधृतानि आसन्। ते योजनां प्रस्तुवन्ति स्म, भाविव्ययम् आकलयन्ति स्म, उपकरणभारान् सङ्गृह्णन्ति स्म। प्रतिदाने ते न तद् याचन्ते स्म यद् दातुं तेषां स्वामिनः असमर्थाः भवेयुः। कार्यसमाप्तौ वेतनानि अतिरिच्य गजधरेभ्यः सम्मानमपि प्रदीयते स्म।

नमः एतादृशेभ्यः शिल्पिभ्यः।

सहसैव (सहसा+एव)	–	अकस्मात्, अचानक
प्रकटीभूताः	–	प्रकट हुए, दिखाई दिए
नेपथ्ये	–	पर्दे के पीछे
तडागाः	–	तालाब
निर्मापयितॄणाम्	–	बनवाने वालों की
निर्मातॄणाम्	–	बनाने वालों की
एककम्	–	इकाई
दशकम्	–	दहाई
शतकम्	–	सैकड़ा
सहस्रकम्	–	हजार
जिज्ञासा	–	जानने की इच्छा
उद्भूता	–	उत्पन्न हुई, जागृत हुई
अस्मात्पूर्वम्	–	इससे पहले
मापयितुम्	–	मापने/नापने के लिये
प्रयतितम्	–	प्रयत्न किया
बहुप्रथिताः	–	बहुत प्रसिद्ध
अशेषे	–	सम्पूर्ण
निर्मीयन्ते स्म	–	बनाए जाते थे

निर्मातारः	–	बनाने वाले
गजधरः	–	गज (लंबाई, चौड़ाई, गहराई, मोटाई मापने की लोहे की छड़) को धारण करने वाला व्यक्ति
तडागनिर्मातॄणाम्	–	तालाब बनाने वालों के
त्रिहस्तपरिमाणात्मिकीम्	–	तीन हाथ के नाप की
लौहयष्टिम्	–	लोहे की छड़
समादृताः	–	आदर को प्राप्त
गाम्भीर्यम्	–	गहराई
वास्तुकाराः	–	भवन आदि का निर्माण करने वाले
कामम्	–	चाहे, भले ही
निभालयन्ति स्म	–	निभाते थे
आधृतानि	–	आधारित
आकलयन्ति स्म	–	अनुमान करते थे
उपकरणसम्भारान्	–	साधन सामग्री को
सङ्गृह्णन्ति स्म	–	संग्रह करते थे
प्रतिदाने	–	बदले में
याचन्ते स्म	–	माँगते थे
अतिरिच्य	–	अतिरिक्त

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) कस्य राज्यस्य भागेषु गजधरः शब्दः प्रयुज्यते?

(ख) गजपरिमाणं कः धारयति?

(ग) कार्यसमाप्तौ वेतनानि अतिरिच्य गजधरेभ्यः किं प्रदीयते स्म?

(घ) के शिल्पिरूपेण न समादृताः भवन्ति?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि लिखत-

(क) तडागाः कुत्र निर्मीयन्ते स्म?

(ख) गजधराः कस्मिन् रूपे परिचिताः?

(ग) गजधराः किं कुर्वन्ति स्म?

(घ) के सम्माननीयाः?

3. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्न-निर्माणं कुरुत-

(क) सुरक्षाप्रबन्धनस्य दायित्वं गजधराः निभालयन्ति स्म।

(ख) तेषां स्वामिनः असमर्थाः सन्ति।

(ग) कार्यसमाप्तौ वेतनानि अतिरिच्य सम्मानमपि प्राप्नुवन्ति।

(घ) गजधरः सुन्दरः शब्दः अस्ति।

(ङ) तडागाः संसारसागराः कथ्यन्ते।

4. अधोलिखितेषु यथापेक्षितं सन्धिं/विच्छेदं कुरुत-

(क) अद्य + अपि = ...

(ख) .... + ... = स्मरणार्थम्

(ग) इति + अस्मिन् = ...

(घ) .... + ... = एतेष्वेव

(ङ) सहसा + एव = ...

5. मञ्जूषातः समुचितानि पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

रचयन्ति	गृहीत्वा	सहसा	जिज्ञासा	सह

(क) छात्राः पुस्तकानि .... विद्यालयं गच्छन्ति।

(ख) मालाकाराः पुष्पैः मालाः ....।

(ग) मम मनसि एका .... वर्तते।

(घ) रमेशः मित्रैः .... विद्यालयं गच्छति।

(ङ) .... बालिका तत्र अहसत।

6. पदनिर्माणं कुरुत-

	धातुः		प्रत्ययः		पदम्
यथा-	कृ	+	तुमुन्	=	कर्तुम्
	हृ	+	तुमुन्	=	....
	तृ	+	तुमुन्	=	....
यथा-	नम्	+	क्त्वा	=	नत्वा
	गम्	+	क्त्वा	=	....
	त्यज्	+	क्त्वा	=	....
	भुज्	+	क्त्वा	=	....

	उपसर्गः	धातुः	प्रत्ययः	=	पदम्
यथा-	उप	गम्	ल्यप्	=	उपगम्य
	सम्	पूज्	ल्यप्	=	....
	आ	नी	ल्यप्	=	....
	प्र	दा	ल्यप्	=	....

7. **कोष्ठकेषु दत्तेषु शब्देषु समुचितां विभक्तिं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-**

यथा- विद्यालयं परितः वृक्षाः सन्ति। (विद्यालय)

(क) .... उभयतः ग्रामाः सन्ति। (ग्राम)

(ख) .... सर्वतः अट्टालिकाः सन्ति। (नगर)

(ग) धिक् ....। (कापुरुष)

यथा- मृगाः मृगैः सह धावन्ति। (मृग)

(क) बालकाः .... सह पठन्ति। (बालिका)

(ख) पुत्र .... सह आपणं गच्छति। (पितृ)

(ग) शिशुः .... सह क्रीडति। (मातृ)

योग्यता-विस्तारः

अनुपम मिश्र-जल संरक्षण के पारंपरिक ज्ञान को समाज के सामने लाने का श्रेय जिन लोगों को है श्री अनुपम मिश्र (जन्म 1948) उनमें अग्रगण्य हैं। 'आज भी खरे हैं तालाब' और 'राजस्थान की रजत बूँदें' पानी पर उनकी बहुप्रशंसित पुस्तकें हैं।

भाषा-विस्तारः

कारक

सामान्य रूप से दो प्रकार की विभक्तियाँ होती हैं।

1. कारक विभक्ति 2. उपपद विभक्ति।

कारक चिह्नों के आधार पर जहाँ पदों का प्रयोग होता है उसे कारक विभक्ति कहते हैं। किन्तु किन्हीं विशेष पदों के कारण जहाँ कारक चिह्नों की उपेक्षा कर किसी विशेष

विभक्ति का प्रयोग होता है उसे उपपद विभक्ति कहते हैं, जैसे–

सर्वतः अभितः, परितः, धिक् आदि पदों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

उदा – (क) विद्यालयं परितः पुष्पाणि सन्ति।

(ख) धिक् देशद्रोहिणम्।

सह, साकम्, सार्द्धम्, समं के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

उदा – (क) जनकेन सह पुत्रः गतः।

(ख) दुर्जनेन समं सख्यम्।

नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा के योग में चतुर्थी विभक्ति प्रयुक्त होती है–

उदा – (क) देशभक्ताय नमः।

(ख) नमः एतादृशेभ्यः शिल्पिभ्यः।

(ग) जनेभ्यः स्वस्ति।

अलम् शब्द के दो अर्थ हैं–पर्याप्त एवं मत (वारण के अर्थ में)। पर्याप्त के अर्थ में चतुर्थी विभक्ति होती है जैसे–देशद्रोहिणे अलं देशरक्षकाः।

मना करने के अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है, जैसे–अलं विवादेन।

विना के योग में द्वितीया, तृतीया एवं पञ्चमी विभक्तियाँ होती हैं, जैसे–परिश्रमं/परिश्रमेण/परिश्रमात् विना न गतिः।

निम्नलिखित क्रियाओं के एकवचन बनाने का प्रयास करें–

आकलयन्ति, सङ्गृह्णन्ति, प्रस्तुवन्ति।

जिज्ञासा–जानने की इच्छा। इसी प्रकार के अन्य शब्द हैं–पिपासा, जिग्मिषा, विवक्षा, बुभुक्षा।

भाव-विस्तारः

अगर हम ध्यान से देखें तो हमारे चारों तरफ ज्ञान एवं कौशल के विविध रूप दिखाई देते हैं। इसमें कुछ ज्ञान और कौशल फलते-फूलते हैं और कई निरंतर क्षीण होते हैं।

इसके कई उदाहरण हमारे सामने हैं। पानी का व्यवस्थापन संरक्षण और खेती–बाड़ी का पारंपरिक तौर–तरीका, शिल्प तथा कारीगरी का ज्ञान दुर्लभ और विलुप्त होने के कगार पर है। वहीं अभियान्त्रिकी एवं संचार से संबंधित ज्ञान नए उभार पर हैं। दरअसल किस तरह का ज्ञान और कौशल आगे विकसित और प्रगुणित होगा और किस तरह का ज्ञान एवं कौशल पिछड़ेगा, विलुप्त होने के लिए विवश होगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि देश और समाज किस तरह के ज्ञान एवं कौशल के विकास में अपना भविष्य सुरक्षित एवं सुखमय मानता है।

परियोजना–कार्यम्

आने वाली छुट्टियों में अपने आस–पास के क्षेत्र के उन पारंपरिक ज्ञान एवं कौशलों का पता लगाएँ जिनका स्थान समाज में अब निरंतर घट रहा है। उन्हें कोई उचित प्रोत्साहन नहीं मिल रहा है या वे विलुप्त होने के कगार पर हैं। उनकी एक सूची भी तैयार करें और उनके लिए प्रयुक्त होने वाले संस्कृत शब्द लिखें। अपने और अपने मित्रों द्वारा तैयार की गई अलग–अलग सूचियों को सामने रखते हुए इन पारंपरिक कौशलों के विलुप्त होने के कारणों का पता लगाएँ।

0851CH09

नवमः पाठः

सप्तभगिन्यः

['सप्तभगिनी' यह एक उपनाम है। उत्तर-पूर्व के सात राज्य विशेष को उक्त उपाधि दी गयी है। इन राज्यों का प्राकृतिक सौन्दर्य अत्यन्त विलक्षण है। इन्हीं के सांस्कृतिक और सामाजिक वैशिष्ट्य को ध्यान में रखकर प्रस्तुत पाठ का सृजन किया गया है।]

प्रत्ययः

अध्यापिका – सुप्रभातम्।

छात्राः – सुप्रभातम्। सुप्रभातम्।

अध्यापिका – भवतु। अद्य किं पठनीयम्?

छात्राः – वयं सर्वे स्वदेशस्य राज्यानां विषये ज्ञातुमिच्छामः।

अध्यापिका – शोभनम्। वदत। अस्माकं देशे कति राज्यानि सन्ति?

सायरा – चतुर्विंशतिः महोदये!

सिल्वी – न हि न हि महाभागे! पञ्चविंशतिः राज्यानि सन्ति।

अध्यापिका – अन्यः कोऽपि....?

स्वरा – *(मध्ये एव)* महोदये! मे भगिनी कथयति यदस्माकं देशे नवविंशतिः राज्यानि सन्ति। एतदतिरिच्य सप्त केन्द्रशासितप्रदेशाः अपि सन्ति।

अध्यापिका – सम्यग्जानाति ते भगिनी। भवतु, अपि जानीथ यूयं यदेतेषु राज्येषु सप्तराज्यानाम् एकः समवायोऽस्ति यः सप्तभगिन्यः इति नाम्ना प्रथितोऽस्ति।

सर्वे – (*साश्चर्यम् परस्परं पश्यन्तः*) सप्तभगिन्यः? सप्तभगिन्यः?

निकोलसः – इमानि राज्यानि सप्तभगिन्यः इति किमर्थं कथ्यन्ते?

अध्यापिका – प्रयोगोऽयं प्रतीकात्मको वर्तते। कदाचित् सामाजिक-सांस्कृतिक-परिदृश्यानां साम्याद् इमानि उक्तोपाधिना प्रथितानि।

समीक्षा – कौतूहलं मे न खलु शान्तिं गच्छति, श्रावयतु तावद् यत् कानि तानि राज्यानि?

अध्यापिका – शृणुत!

अद्वयं मत्रयं चैव न-त्रि-युक्तं तथा द्वयम्।
सप्तराज्यसमूहोऽयं भगिनीसप्तकं मतम्।।

इत्थं भगिनीसप्तके इमानि राज्यानि सन्ति-अरुणाचलप्रदेशः, असमः, मणिपुरम्, मिजोरमः, मेघालयः, नगालैण्डः, त्रिपुरा चेति। यद्यपि क्षेत्रपरिमाणैः इमानि लघूनि वर्तन्ते तथापि गुणगौरवदृष्ट्या बृहत्तराणि प्रतीयन्ते।

सर्वे – कथम्? कथम्?

अध्यापिका – इमाः सप्तभगिन्यः स्वीये प्राचीनेतिहासे प्रायः स्वाधीनाः एव दृष्टाः। न केनापि शासकेन इमाः स्वायत्तीकृताः। अनेक-संस्कृति-विशिष्टायां भारतभूमौ एतासां भगिनीनां संस्कृतिः महत्त्वाधायिनी इति।

तन्वी – अयं शब्दः सर्वप्रथमं कदा प्रयुक्तः?

अध्यापिका – श्रुतमधुरशब्दोऽयं सर्वप्रथमं विगतशताब्दस्य द्विसप्ततितमे वर्षे त्रिपुराराज्यस्योद्घाटनक्रमे केनापि प्रवर्तितः। अस्मिन्नेव काले एतेषां राज्यानां पुनः सङ्घटनं विहितम्।

स्वरा – अन्यत् किमपि वैशिष्ट्यमस्ति एतेषाम्?

अध्यापिका – नूनम् अस्ति एव। पर्वत–वृक्ष–पुष्प–प्रभृतिभिः प्राकृतिकसम्पद्भिः सुसमृद्धानि सन्ति इमानि राज्यानि। भारतवृक्षे च पुष्प–स्तबकसदृशानि विराजन्ते एतानि।

राजीवः – भवति! गृहे यथा सर्वाधिका रम्या मनोरमा च भगिनी भवति तथैव भारतगृहेऽपि सर्वाधिकाः रम्याः इमाः सप्तभगिन्यः सन्ति।

अध्यापिका – मनस्यागता ते इयं भावना परमकल्याणमयी परं सर्वे न तथा अवगच्छन्ति। अस्तु, अस्ति तावदेतेषां विषये किञ्चिद् वैशिष्ट्यमपि कथनीयम्। सावहितमनसा शृणुत–

जनजातिबहुलप्रदेशोऽयम्। गारो–खासी–नगा–मिजो–प्रभृतयः बहवः जनजातीयाः अत्र निवसन्ति। शरीरेण ऊर्जस्विनः एतत्प्रादेशिकाः बहुभाषाभिः समन्विताः, पर्वपरम्पराभिः परिपूरिताः, स्वलीला–कलाभिश्च निष्णाताः सन्ति।

मालती – महोदये! तत्र तु वंशवृक्षा अपि प्राप्यन्ते?

अध्यापिका – आम्। प्रदेशेऽस्मिन् हस्तशिल्पानां बाहुल्यं वर्तते। आवस्त्राभूषणेभ्यः गृहनिर्माणपर्यन्तं प्रायः वंशवृक्षनिर्मितानां वस्तूनाम् उपयोगः क्रियते। यतो हि अत्र वंशवृक्षाणां प्राचुर्यं विद्यते। साम्प्रतं वंशोद्योगोऽयं अन्ताराष्ट्रियख्यातिम् अवाप्तोऽस्ति।

अभिनवः – भगिनीप्रदेशोऽयं बह्वाकर्षकः इति प्रतीयते।

सलीमः – किं भ्रमणाय भगिनीप्रदेशोऽयं समीचीनः?

सर्वे छात्राः – (उच्चैः) महोदये! आगामिनि अवकाशे वयं तत्रैव गन्तुमिच्छामः।

स्वरा – भवत्यपि अस्माभिः सार्द्धं चलतु।

अध्यापिका – रोचते मेऽयं विचारः। एतानि राज्यानि तु भ्रमणार्थं स्वर्गसदृशानि इति।

बाढम्	–	बहुत अच्छा
पठनीयम्	–	पढ़ना चाहिए
ज्ञातुम्	–	जानने के लिए
कति	–	कितने
चतुर्विंशतिः	–	चौबीस
पञ्चविंशतिः	–	पचीस
भगिनी	–	बहन
अष्टाविंशतिः	–	अठाईस
केन्द्रशासितप्रदेशाः	–	केन्द्र द्वारा शासित प्रदेश
अतिरिच्य	–	अतिरिक्त
भवतु	–	अच्छा
समवायः	–	समूह
प्रथितः	–	प्रसिद्ध
प्रतीकात्मकः (प्रतीक+आत्मकः)	–	साङ्केतिक
कदाचित्	–	सम्भवतः
साम्याद्	–	समानता के कारण
उक्तोपाधिना (उक्त+उपाधिना)	–	कही गयी उपाधि से/के कारण
नाम्नि	–	नाम में
संशयः	–	सन्देह

अपरतः	–	दूसरी ओर
क्षेत्रपरिमाणैः	–	क्षेत्रफल से
लघूनि	–	छोटे
गुणगौरवदृष्ट्या	–	गुण एवं गौरव की दृष्टि से
बृहत्तराणि	–	बड़े
स्वाधीनाः (स्व+अधीनाः)	–	स्वतन्त्र
स्वायत्तीकृताः	–	अपने अधीन किये गये
महत्त्वाधायिनी (महत्त्व+आधायिनी)	–	महत्त्व को रखने वाली, महत्त्वपूर्ण
श्रुतमधुरशब्दः	–	सुनने में मधुर शब्द
प्रभृतिभिः	–	आदि से
विहितम्	–	विधिपूर्वक किया गया
प्राकृतिकसम्पद्भिः	–	प्राकृतिक सम्पदाओं से
सुसमृद्धानि	–	बहुत समृद्ध
भारतवृक्षे	–	भारत रूपी वृक्ष में/पर
पुष्पस्तबकसदृशानि	–	पुष्प के गुच्छे के समान
हृद्या	–	प्रिय (हृदय को प्रिय लगने वाली) मनोरम
रम्या	–	रमणीय
सावहितमनसा	–	सावधान मन से
ऊर्जस्विनः	–	ऊर्जा युक्त
पर्वपरम्पराभिः	–	पर्वों की परम्परा से
परिपूरिताः	–	पूर्ण, भरे-पूरे
समभिनन्दनीयम्	–	स्वागत योग्य

समीचीनः	–	बहुत अच्छा
स्वलीलाकलाभिः	–	अपनी क्रिया एवं कलाओं से
निष्णाताः	–	पारङ्गत, निपुण
वंशवृक्षनिर्मितानाम्	–	बाँस के वृक्षों से निर्मित
अवाप्तः	–	प्राप्त
बह्वाकर्षकः (बहु+आकर्षकः)	–	अत्यन्त आकर्षक/अत्यधिक आकर्षक

अभ्यासः

1. उच्चारणं कुरुत–

सुप्रभातम्	महत्त्वाधायिनी	पर्वपरम्पराभिः
चतुर्विंशतिः	द्विसप्ततितमे	वंशवृक्षनिर्मितानाम्
सप्तभगिन्यः	प्राकृतिकसम्पद्भिः	वंशोद्योगोऽयम्
गुणगौरवदृष्ट्या	पुष्पस्तबकसदृशानि	अन्ताराष्ट्रियख्यातिम्

2. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत–

(क) अस्माकं देशे कति राज्यानि सन्ति?

(ख) प्राचीनेतिहासे काः स्वाधीनाः आसन्?

(ग) केषां समवायः 'सप्तभगिन्यः' इति कथ्यते?

(घ) अस्माकं देशे कति केन्द्रशासितप्रदेशाः सन्ति?

(ङ) सप्तभगिनी–प्रदेशे कः उद्योगः सर्वप्रमुखः?

3. पूर्णवाक्येन उत्तराणि लिखत–

(क) भगिनीसप्तके कानि राज्यानि सन्ति?

(ख) इमानि राज्यानि सप्तभगिन्यः इति किमर्थं कथ्यन्ते?

(ग) सप्तभगिनी –प्रदेशे के निवसन्ति?

(घ) एतत्प्रादेशिकाः कैः निष्णाताः सन्ति?

(ङ) वंशवृक्षवस्तूनाम् उपयोगः कुत्र क्रियते?

4. रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) वयं स्वदेशस्य राज्यानां विषये ज्ञातुमिच्छामि?

(ख) सप्तभगिन्यः प्राचीनेतिहासे प्रायः स्वाधीनाः एव दृष्टाः?

(ग) प्रदेशेऽस्मिन् हस्तशिल्पानां बाहुल्यं वर्तते?

(घ) एतानि राज्यानि तु भ्रमणार्थं स्वर्गसदृशानि?

5. यथानिर्देशमुत्तरत–

(क) 'महोदये! मे भगिनी कथयति'– अत्र 'मे' इति सर्वनामपदं कस्यै प्रयुक्तम्?

(ख) समाजिक–सांस्कृतिकपरिदृश्यानां साम्याद् इमानि उक्तोपाधिना प्रथितानि– अस्मिन् वाक्ये प्रथितानि इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(ग) एतेषां राज्यानां पुनः सङ्घटनम् विहितम् – अत्र 'सङ्घटनम्' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किम्?

(घ) अत्र वंशवृक्षाणां प्राचुर्यम् विद्यते – अस्मात् वाक्यात् 'अल्पता' इति पदस्य विपरीतार्थकं पदं चित्वा लिखत?

(ङ) 'क्षेत्रपरिमाणैः इमानि लघूनि वर्तन्ते' – वाक्यात् 'सन्ति' इति क्रियापदस्य समानार्थकपदं चित्वा लिखत?

6. (अ) पाठात् चित्वा तद्भवपदानां कृते संस्कृतपदानि लिखत–

तद्भव-पदानि	संस्कृत-पदानि
यथा–सात	सप्त
बहिन	....
संगठन	....
बाँस	....

आज ....

खेत ....

(आ) भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत-

(क) गच्छति, पठति, धावति, अहसत्, क्रीडति।

(ख) छात्रः, सेवकः, शिक्षकः, लेखिका, क्रीडकः।

(ग) पत्रम्, मित्रम्, पुष्पम्, आम्रः, फलम्।

(घ) व्याघ्रः, भल्लूकः, गजः, कपोतः, शाखा, वृषभः, सिंहः।

(ङ) पृथिवी, वसुन्धरा, धरित्री, यानम्, वसुधा।

7. विशेष्य-विशेषणानाम् उचितं मेलनम् कुरुत-

विशेषण-पदानि	विशेष्य-पदानि
अयम्	संस्कृतिः
संस्कृतिविशिष्टायाम्	इतिहासे
महत्त्वाधायिनी	प्रदेशः
प्राचीने	समवायः
एकः	भारतभूमौ

योग्यता-विस्तारः

* **अद्वयं मत्रयं चैव न-त्रि-युक्तं तथा द्वयम्।**
सप्तराज्यसमूहोऽयं भगिनीसप्तकं मतम्॥

यह राज्यों के नामों को याद रखने का एक सरल तरीका है। इसका अर्थ है अ से आरम्भ होने वाले दो, म से आरम्भ होने वाले तीन, न से नगालैण्ड और त्रि से त्रिपुरा का बोध होता है। इसी प्रकार अठारह पुराणों के नाम याद रखने के लिये यह श्लोक प्रसिद्ध है-

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अ-ना-प-लिंग-कूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते॥

* 'सप्तभगिनी' इस उपनाम का सर्वप्रथम प्रयोग 1972 में श्री ज्योति प्रसाद सैकिया ने आकाशवाणी के साथ भेंटवार्ता के कार्यक्रम में किया था।
* इनके अन्तर्गत आने वाले राज्यों का उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में भी प्राप्त होता है यथा–महाभारत, रामायण, पुराण आदि।
* इन राज्यों की राजधानी क्रमशः इस प्रकार है–

अरुणाचल प्रदेश	–	ईटानगर
असम	–	दिसपुर
मणिपुर	–	इम्फाल
मिजोरम	–	ऐजोल
मेघालय	–	शिलाङ्ग
नगालैण्ड	–	कोहिमा
त्रिपुरा	–	अगरतल्ला

* बिहू, मणिपुरी, नानक्रम आदि इस प्रदेश के प्रमुख नृत्य हैं।
* नगा, मिजो, खासी, असमी, बांग्ला, पदम, बोडो, गारो, जयन्तिया आदि यहाँ की प्रमुख भाषाएँ हैं।

सप्तसंख्या पर कुछ अन्य प्रचलित नाम हैं–

सप्तसिन्धु –'सप्तभगिनी' के समान सप्तसिन्धु भी हैं। ये सप्तसिन्धु हैं–सिन्धु, शुतुद्री (सतलज), इरावती (इरावदी), वितस्ता (झेलम), विपाशा (व्यास), असिक्नी (चिनाब) और सरस्वती।

सप्तपर्वत – महेन्द्र, मलय, हिमवान्, अर्बुद, विन्ध्य, सह्याद्रि, श्रीशैल।

सप्तर्षि – मरीचि, पुलस्त्य, अंगिरा, क्रतु, अत्रि, पुलह, वसिष्ठ।

कृष्णनाथ की पुस्तक अरुणाचल यात्रा (वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर 2002) पठनीय है।

परियोजना-कार्यम्

पाठ में स्थित अद्वयं ..... वाली पहेली से सातों राज्यों के नाम को समझो। इसी प्रकार अठारह पुराणों के नामों को भी प्रदत्त श्लोक द्वारा समझों एवं अध्यापक/अध्यापिका की सहायता से लिखो।

0851CH10

दशमः पाठः

नीतिनवनीतम्

[प्रस्तुत पाठ 'मनुस्मृति' के कतिपय श्लोकों का संकलन है जो सदाचार की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यहाँ माता-पिता तथा गुरुजनों को आदर और सेवा से प्रसन्न करने वाले अभिवादनशील मनुष्य को मिलने वाले लाभ की चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त सुख-दुख में समान रहना, अन्तरात्मा को आनन्दित करने वाले कार्य करना तथा इसके विपरीत कार्यों को त्यागना, सम्यक् विचारोपरान्त तथा सत्यमार्ग का अनुसरण करते हुए कार्य करना आदि शिष्टाचारों का उल्लेख भी किया गया है।]

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ।।1।।

यं मातापितरौ क्लेशं सहेते सम्भवे नृणाम्।
न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि ।।2।।

तयोर्नित्यं प्रियं कुर्यादाचार्यस्य च सर्वदा।
तेष्वेव त्रिषु तुष्टेषु तपः सर्वं समाप्यते ।।3।।

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।
एतद्विद्यात्समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः ।।4।।

यत्कर्म कुर्वतोऽस्य स्यात्परितोषोऽन्तरात्मनः।
तत्प्रयत्नेन कुर्वीत विपरीतं तु वर्जयेत् ।।5।।

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।
सत्यपूतां वदेद्वाचं मनः पूतं समाचरेत् ।।6।।

अभिवादनशीलस्य	–	प्रणाम करने के स्वभाव वाले के
वृद्धोपसेविनः	–	वृद्ध+उपसेविनः – बड़ों की सेवा करने वाले के
क्लेशम्	–	कष्ट
निष्कृतिः	–	निस्तार
कुर्वतः	–	करते हुए का
परितोषः	–	सन्तोष
अन्तरात्मनः	–	अन्रात्मा की (हृदय की)।
कुर्वीत	–	करना चाहिए
न्यसेत्	–	रखना चाहिए, रखे
पूतम्	–	पवित्र
नृणाम्	–	मनुष्यों का
वर्षशतैः	–	सौ वर्षों में
समाप्यते	–	समाप्त होता है
समासेन	–	संक्षेप में
विद्यात्	–	जानना चाहिए
सत्यपूताम्	–	सत्य से पवित्र (सच)

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-**

(क) नृणां सम्भवे कौ क्लेशं सहेते?
(ख) कीदृशं जलं पिबेत्?
(ग) नीतिनवनीतं पाठः कस्मात् ग्रन्थात् सङ्कलित?
(घ) कीदृशीं वाचं वदेत्?
(ङ) दुःखं किं भवति?
(च) आत्मवशं किं भवति?
(छ) कीदृशं कर्म समाचरेत्?

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि पूर्णवाक्येन लिखत-**

(क) पाठेऽस्मिन् सुखदुःखयोः किं लक्षणम् उक्तम्?
(ख) वर्षशतैः अपि कस्य निष्कृतिः कर्तुं न शक्या?
(ग) "त्रिषु तुष्टेषु तपः समाप्यते" - वाक्येऽस्मिन् त्रयः के सन्ति?
(घ) अस्माभिः कीदृशं कर्म कर्तव्यम्?
(ङ) अभिवादनशीलस्य कानि वर्धन्ते?
(च) सर्वदा केषां प्रियं कुर्यात्?

3. **स्थूलपदान्यवलम्ब्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-**

(क) **वृद्धोपसेविनः** आयुर्विद्या यशो बलं न वर्धन्ते।
(ख) मनुष्यः **सत्यपूतां** वाचं वदेत्।
(ग) त्रिषु तुष्टेषु सर्वं **तपः** समाप्यते?

(घ) **मातापितरौ** नृणां सम्भवे अकथनीयं क्लेशं सहेते।

(ङ) **तयोः** नित्यं प्रियं कुर्यात्।

4. संस्कृतभाषयां वाक्यप्रयोगं कुरुत-

(क) विद्या (ख) तपः (ग) समाचरेत् (घ) परितोषः (ङ) नित्यम्

5. शुद्धवाक्यानां समक्षम् आम् अशुद्धवाक्यानां समक्षं च नैव इति लिखत-

(क) अभिवादनशीलस्य किमपि न वर्धते।

(ख) मातापितरौ नृणां सम्भवे कष्टं सहेते।

(ग) आत्मवशं तु सर्वमेव दुःखमस्ति।

(घ) येन पितरौ आचार्यः च सन्तुष्टाः तस्य सर्वं तपः समाप्यते।

(ङ) मनुष्यः सदैव मनः पूतं समाचरेत्।

(च) मनुष्यः सदैव तदेव कर्म कुर्यात् येनान्तरात्मा तुष्यते।

6. समुचितपदेन रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) मातापित्रोः तपसः निष्कृतिः .... कर्तुमशक्या। (दशवर्षैरपि/षष्टिः वर्षैरपि/वर्षशतैरपि)।

(ख) नित्यं वृद्धोपसेविनः .... वर्धन्ते (चत्वारि/पञ्च/षट्)।

(ग) त्रिषु तुष्टेषु .... सर्वं समाप्यते (जपः/तपः/कर्म)।

(घ) एतत् विद्यात् .... लक्षणं सुखदुःखयोः। (शरीरेण!समासेन/विस्तारेण)

(ङ) दृष्टिपूतम् न्यसेत् ....। (हस्तम्/पादम्/मुखम्)

(च) मनुष्यः मातापित्रोः आचार्यस्य च सर्वदा .... कुर्यात्। (प्रियम्/अप्रियम्/अकार्यम्)

7. मञ्जूषातः चित्वा उचिताव्ययेन वाक्यपूर्तिं कुरुत-

तावत्	अपि	एव	यथा	नित्यं	यादृशम्

(क) तयोः .... प्रियं कुर्यात्।

(ख) .... कर्म करिष्यसि। तादृशं फलं प्राप्स्यसि।

(ग) वर्षशतैः .... निष्कृतिः न कर्तुं शक्या।

(घ) तेषु .... त्रिषु तुष्टेषु तपः समाप्यते।

(ङ) .... राजा तथा प्रजा

(च) यावत् सफलः न भवति .... परिश्रमं कुरु।

योग्यता-विस्तार

भावविस्तारः

संस्कृत साहित्य में जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी कर्तव्य-निर्देश दिए गए हैं जो यत्र-तत्र सुभाषितों और नीतिश्लोकों के रूप में प्राप्त होते हैं। जरूरत है उन्हें ढूँढने वाले मनुष्य की। जीवनमार्ग पर चलते हुए जब किंकर्त्तव्यविमूढ़ता की स्थिति आती है तो संस्कृत सूक्तियाँ हमें मार्गबोध कराती हैं। नीतिशतक, विदुरनीति, चाणक्यनीतिदर्पण आदि ग्रन्थ ऐसे ही श्लोकों के अमर भण्डारगार हैं।

1. **कुछ समानान्तर श्लोक**

कर्मणा मनसा वाचा चक्षुषाऽपि चतुर्विधम्।
प्रसादयति लोकं यस्तं लोकोऽनुप्रसीदति॥

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः॥

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।

यस्मिन् देशे न सम्मानो न प्रीतिर्न च बान्धवाः।
न च विद्यागमः कश्चित् न तत्र दिवसं वसेत्।

2. **संधि की आवृत्ति**

शिष्टाचारः	=	शिष्ट	+	आचारः
वृद्धोपसेविनः	=	वृद्धः	+	उपसेविनः

आयुर्विद्या	=	आयुः	+	विद्या
यशो बलम्	=	यशः	+	बलम्
वर्षशतैरपि	=	वर्षशतैः	+	अपि
तयोर्नित्यं	=	तयोः	+	नित्यम्
कुर्यादाचार्यस्य	=	कुर्यात्	+	आचार्यस्य
तेष्वेव	=	तेषु	+	एव
सर्वमात्मवशम्	=	सर्वम्	+	आत्मवशम्
कुर्वतोऽस्य	=	कुर्वतः	+	अस्य
परितोषोऽन्तरात्मनः	=	परितोषः	+	अन्तरात्मनः
वदेद्वाचम्	=	वदेत्	+	वाचम्

3. **विधिलिङ् के विविध प्रयोग** – (किसी भी काम को) करना चाहिए, इस अर्थ में विधिलिङ् का प्रयोग होता है। पाठ में आए कुछ शब्दों के प्रयोग अधोलिखित हैं –

स्यात्	–	(अस् धातु)
पिबेत्	–	(पा धातु)
वर्जयेत्	–	(वर्ज् धातु)
वदेत्	–	(वद् धातु)

महान्तं प्राप्य सद्बुद्धेः
सत्यजेन्न लघूजनम्।
यत्रास्ति सूचिका कार्यं
कृपाणः किं करिष्यति।

विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चित् निरर्थकम्।
अश्वस्चेत् धावने वीरः भारस्य वहने खरः।।

ये श्लोक भी इसी बात की पुष्टि करते हैं कि संसार में कोई भी छोटा या बड़ा नहीं है। संसार की क्रियाशीलता, गीतशीलता में सभी का अपना-अपना महत्त्व है सभी के अपने-अपने कार्य हैं, अपना-अपना योगदान है, अतः हमें न तो किसी कार्य को छोटा या बड़ा, तुच्छ या महान् समझना चाहिए और न ही किसी प्राणी को। आपस में मिल जुल कर सौहार्दपूर्ण तरीके से जीवन यापन से ही प्रकृति का सौन्दर्य है। विभिन्न प्राणियों से संबंधित निम्नलिखित श्लोकों को भी पढ़िए और रसास्वादन कीजिए-

- इन्द्रियाणि च संयम्य बकवत् पण्डितो नरः।

  देशकालबलं ज्ञात्वा सर्वकार्याणि साधयेत्।।

- काकचेष्टः बकध्यानी शुनोनिद्रः तथैव च।

  अल्पाहारः गृहत्यागः विद्यार्थी पञ्चलक्षणम्।।

- स्पृशन्नपि गजो हन्ति जिघ्रन्नपि भुजङ्गमः।

  हसन्नपि नृपो हन्ति, मानयन्नपि दुर्जनः।।

- प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यो,

  देवोऽपि तं लङ्घयितुं न शक्तः।

  तस्मान्न शोचामि न विस्मयो मे

  यदस्मदीयं नहि तत्परेषाम्।।

- अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।

  उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

वस्तुतः मित्रों के बिना कोई भी जीना पसन्द नहीं करता, चाहे उसके पास बाकी सभी अच्छी चीज़ें क्यों न हों। अतः हमें सभी के साथ मिलजुल कर अपने आस-पास के वातावरण की सुरक्षा और सुन्दरता में सदैव सहयोग करना चाहिए।

अकिञ्चनस्य दान्तस्य, शान्तस्य समचेतसः।

मया सन्तुष्टमानसः, सर्वाः सुखमयाः दिशः।।

0851CH11

एकादशः पाठः

सावित्री बाई फुले

[शिक्षा हमारा अधिकार है। हमारे समाज में कई समुदाय इससे लम्बे समय तक वञ्चित रहे हैं। उन्हें इस अधिकार को पाने के लिए लम्बा संघर्ष करना पड़ा है। लड़कियों को तो और ज्यादा अवरोध झेलना पड़ता रहा है। प्रस्तुत पाठ इस संघर्ष का नेतृत्व करने वाली प्रातः स्मरणीय एवम् अनुकरणीय महिला शिरोमणि सावित्री बाई फुले के योगदान पर केन्द्रित है।]

उपरि निर्मितं चित्रं पश्यत। इदं चित्रं कस्याश्चित् पाठशालायाः वर्तते। इयं सामान्या पाठशाला नास्ति। इयमस्ति महाराष्ट्रस्य प्रथमा कन्यापाठशाला। एका शिक्षिका गृहात् पुस्तकानि आदाय चलति। मार्गे कश्चित् तस्याः उपरि धूलिं कश्चित् च प्रस्तरखण्डान्

क्षिपति। परं सा स्वदृढनिश्चयात् न विचलति। स्वविद्यालये कन्याभिः सविनोदम् आलपन्ती सा अध्यापने संलग्ना भवति। तस्याः स्वकीयम् अध्ययनमपि सहैव प्रचलति। केयं महिला? अपि यूयमिमां महिलां जानीथ? इयमेव महाराष्ट्रस्य प्रथमा महिला शिक्षिका सावित्री बाई फुले नामधेया।

जनवरी मासस्य तृतीये दिवसे १८३१ तमे ख्रिस्ताब्दे महाराष्ट्रस्य नायगांव-नाम्नि स्थाने सावित्री अजायत। तस्याः माता लक्ष्मीबाई पिता च खण्डोजी इति अभिहितौ। नववर्षदेशीया सा ज्योतिबा-फुले-महोदयेन परिणीता। सोऽपि तदानीं त्रयोदशवर्षकल्पः एव आसीत्। यतोहि सः स्त्रीशिक्षायाः प्रबलः समर्थकः आसीत् अतः सावित्र्याः मनसि स्थिता अध्ययनाभिलाषा उत्साहं प्राप्तवती। इतः परं सा साग्रहम् आङ्ग्लभाषाया अपि अध्ययनं कृतवती।

१८४८ तमे ख्रिस्ताब्दे पुणेनगरे सावित्री ज्योतिबामहोदयेन सह कन्यानां कृते प्रदेशस्य प्रथमं विद्यालयम् आरभत। तदानीं सा केवलं सप्तदशवर्षीया आसीत्। १८५१ तमे ख्रिस्ताब्दे अस्पृश्यत्वात् तिरस्कृतस्य समुदायस्य बालिकानां कृते पृथक्तया तया अपरः विद्यालयः प्रारब्धः।

सामाजिककुरीतीनां सावित्री मुखरं विरोधम् अकरोत्। विधवानां शिरोमुण्डनस्य निराकरणाय सा साक्षात् नापितैः मिलिता। फलतः केचन नापिताः अस्यां रूढौ सहभागिताम् अत्यजन्। एकदा सावित्र्या मार्गे दृष्टं यत् कूपं निकषा शीर्णवस्त्रावृताः तथाकथिताः निम्नजातीयाः काश्चित् नार्यः जलं पातुं याचन्ते स्म। उच्चवर्गीयाः उपहासं कुर्वन्त्यः कूपात् जलोद्धरणम् अवारयन्। सावित्री एतत् अपमानं सोढुं नाशक्नोत्। सा ताः स्त्रियः निजक्षेत्रं नीतवती। तत्र तडागं दर्शयित्वा अकथयत् च यत् यथेष्टं जलं नयत। सार्वजनिकोऽयं तडागः। अस्मात् जलग्रहणे नास्ति जातिबन्धनम्। तया मनुष्याणां समानतायाः स्वतन्त्रतायाश्च पक्षः सर्वदा सर्वथा समर्थितः।

'महिला सेवामण्डल' 'शिशुहत्याप्रतिबन्धकगृहम्' इत्यादीनां संस्थानां स्थापनायां फुलेदम्पत्योः अवदानं महत्त्वपूर्णम्। सत्यशोधकमण्डलस्य गतिविधिषु अपि सावित्री अतीव सक्रिया आसीत्। अस्य मण्डलस्य उद्देश्यम् आसीत् उत्पीडितानां समुदायानां स्वाधिकारान् प्रति जागरणम् इति।

सावित्री अनेकाः संस्थाः प्रशासनकौशलेन सञ्चालितवती। दुर्भिक्षकाले प्लेग-काले च सा पीडितजनानाम् अश्रान्तम् अविरतं च सेवाम् अकरोत्। सहायता- सामग्री-व्यवस्थायै सर्वथा प्रयासम् अकरोत्। महारोगप्रसारकाले सेवारता सा स्वयम् असाध्यरोगेण ग्रस्ता १८९७ तमे ख्रिस्ताब्दे दिवङ्गता।

साहित्यरचनया अपि सावित्री महीयते। तस्याः काव्यसङ्कलनद्वयं वर्तते 'काव्यफुले' 'सुबोधरत्नाकर' चेति। भारतदेशे महिलोत्थानस्य गहनावबोधाय सावित्रीमहोदयायाः जीवनचरितम् अवश्यम् अध्येतव्यम्।

आदाय – लेकर

प्रस्तरखण्डान् – पत्थर के टुकड़ों को

सविनोदम् – हँसी मजाक के साथ

आलपन्ती – बात करती हुई

अजायत – पैदा हुई

अभिहितौ – कहे गये हैं

परिणीता – ब्याही गयी

अस्पृश्यतया – छुआछूत के कारण

प्रारब्धः	–	आरम्भ किया
निराकरणाय	–	दूर करने के लिए
रूढौ	–	रूढ़ि में, रिवाज में
शीर्णवस्त्रावृताः	–	फटे-पुराने, चिथड़े वस्त्रों को धारण करती हुई
पातुम्	–	पीने के लिए
सोढुम्	–	सहने में
उत्पीडितानाम्	–	सताए हुओं का
अश्रान्तम्	–	बिना थके हुए
महीयते	–	बढ़-चढ़कर हैं
गहनावबोधाय (गहन+अवबोधाय)	–	गहराई से समझने के लिए

1. **एकपदेन उत्तरत–**

(क) कीदृशीनां कुरीतीनां सावित्री मुखरं विरोधम् अकरोत्?

(ख) के कूपात् जलोद्धरणम् अवारयन्?

(ग) का स्वदृढनिश्चयात् न विचलति?

(घ) विधवानां शिरोमुण्डनस्य निराकरणाय सा कैः मिलिता?

(ङ) सा कासां कृते प्रदेशस्य प्रथमं विद्यालयम् आरभत?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) किं किं सहमाना सावित्रीबाई स्वदृढनिश्चयात् न विचलति?

(ख) सावित्रीबाईफुलेमहोदयाया: पित्रो: नाम किमासीत्?

(ग) विवाहानन्तरमपि सावित्र्या: मनसि अध्ययनाभिलाषा कथम् उत्साहं प्राप्तवती?

(घ) जलं पातुं निवार्यमाणा: नारी: सा कुत्र नीतवती किञ्चाकथयत्?

(ङ) कासां संस्थानां स्थापनायां फुलेदम्पत्यो: अवदानं महत्त्वपूर्णम्?

(च) सत्यशोधकमण्डलस्य उद्देश्यं किमासीत्?

(छ) तस्या: द्वयो: काव्यसङ्कलनयो: नामनी के?

3. रेखाङ्कितपदानि अधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) सावित्रीबाई, कन्याभि: सविनोदम् आलपन्ती अध्यापने संलग्ना भवति स्म।

(ख) सा महाराष्ट्रस्य प्रथमा महिला शिक्षिका आसीत्।

(ग) सा स्वपतिना सह कन्यानां कृते प्रदेशस्य प्रथमं विद्यालयम् आरभत।

(घ) तया मनुष्याणां समानताया: स्वतन्त्रतायाश्च पक्ष: सर्वदा समर्थित:।

(ङ) साहित्यरचनया अपि सावित्री महीयते।

4. यथानिर्देशमुत्तरत-

(क) इदं चित्रं पाठशालाया: वर्तते- अत्र 'वर्तते' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(ख) तस्या: स्वकीयम् अध्ययनमपि सहैव प्रचलति – अस्मिन् वाक्ये विशेष्यपदं किम्?

(ग) अपि यूयमिमां महिलां जानीथ- अस्मिन् वाक्ये 'यूयम्' इति पदं केभ्य: प्रयुक्तम्?

(घ) सा ता: स्त्रिय: निजगृहं नीतवती – अस्मिन् वाक्ये 'सा' इति सर्वनामपदं कस्यै प्रयुक्तम्?

(ङ) शीर्णवस्त्रावृता: तथाकथिता: निम्नजातीया: काश्चित् नार्य: जलं पातुं याचन्ते स्म – अत्र 'नार्य:' इति पदस्य विशेषणपदानि कति सन्ति, कानि च इति लिखत?

5. अधोलिखितानि पदानि आधृत्य वाक्यानि रचयत-

(क) स्वकीयम् - ....

(ख) सविनोदम् - ....

(ग) सक्रिया - ....

(घ) प्रदेशस्य - ....

(ङ) मुखरम् - ....

(च) सर्वथा - ....

6. (अ) अधोलिखितानि पदानि आधृत्य वाक्यानि रचयत-

(क) उपरि - ....

(ख) आदानम् - ....

(ग) परकीयम् - ....

(घ) विषमता - ....

(ङ) व्यक्तिगतम् - ....

(च) आरोहः - ....

(आ) अधोलिखितपदानां समानार्थकपदानि पाठात् चित्वा लिखत-

मार्गे अविरतम् अध्यापने अवदानम् यथेष्टम् मनसि

(क) शिक्षणे - ....

(ख) पथि - ....

(ग) हृदये - ....

(घ) इच्छानुसारम् - ....

(ङ) योगदानम् - ....

(च) निरन्तरम् - ....

सावित्री बाई फुले

7. (अ) अधोलिखितानां पदानां लिङ्ग, विभक्ति, वचनं च लिखत-

पदानि		लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
(क) धूलिम्	–	....	....	....
(ख) नाम्नि	–	....	....	....
(ग) अपरः	–	....	....	....
(घ) कन्यानाम्	–	....	....	....
(ङ) सहभागिता	–	....	....	....
(च) नापितैः	–	....	....	....

7. (आ) उदाहरणमनुसृत्य निर्देशानुसारं लकारपरिवर्तनं कुरुत-

यथा – सा शिक्षिका अस्ति। (लङ्लकारः) सा शिक्षिका आसीत्।

(क) सा अध्यापने संलग्ना भवति। (लृटलकारः)

(ख) सः त्रयोदशवर्षकल्पः अस्ति। (लङ्लकारः)

(ग) महिलाः तडागात् जलं नयन्ति। (लोट्लकारः)

(घ) वयं प्रतिदिनं पाठं पठामः। (विधिलिङ्ग)

(ङ) यूयं किं विद्यालयं गच्छथ? (लृटलकारः)

(च) ते बालकाः विद्यालयात् गृहं गच्छन्ति।(लङ्लकारः)

योग्यता-विस्तारः

भावविस्तारः

सावित्री फुले सामाजिक उत्थानकर्त्री के अतिरिक्त एक कवयित्री भी रही हैं आइये उनकी कुछ कविताओं का रसास्वादन करें-

एक बालगीत में बच्चों को दिया गया संदेश–

करना है जो काम आज,
उसे करो तुम तत्काल
जो करना है दोपहर में,
उसे कर लो तुम अभी आज
पल भर के बाद का काम
पूरा कर लो इसी वक्त।

– **स्वाभिमान से जीने के लिए**
पढ़ाई करो पाठशाला की।
इन्सानों का सच्चा गहना शिक्षा है,
चलो पाठशाला चलो।

– चलो चलें पाठशाला हमें है पढ़ना, नहीं अब वक्त गंवाना।
ज्ञान विद्या प्राप्त करें, चलो हम संकल्प करें।
अज्ञानता और गरीबी की, गुलामीगिरी चलो तोड़ डालें
सदियों का लाचारी भरा जीवन चलो फेंक दें।
हमें न हो इच्छा कभी आराम की
ध्येय साध्य करें पढ़कर शिक्षा का।
अच्छे अवसर का आज ही सदुपयोग करें,
हमें प्राप्त हुआ है सहयोग समय का।

प्रकृति का सार्वभौमिक सत्य जियो और जीने दो का प्रतिपादन–

मानव जीवन को करें समृद्ध,
भय, चिन्ता सभी छोड़कर आओ
खुद जीएँ और औरों को भी जीनें दें
मानव प्राणी, निसर्ग सृष्टि
एक ही सिक्के के दो पहलू।

एक जानकर सारी जीवसृष्टि को,
प्रकृति के अमूल्य निधि मानव की चलो, कद्र करें।

भाषाविस्तार:

- सामान्यत: वाक्यों में कारकचिह्नों के प्रयोग को संस्कृत में शब्दरूपों के माध्यम से जाना जाता है, अब तक हम अनेकानेक शब्दरूपों का प्रयोग जानते समझते रहे हैं, जैसे अकारान्त-आकारान्त-ईकारान्त-इत्यादि। प्रस्तुत पाठ में 'सावित्रीबाई', इस शब्द में यदि हम सावित्री शब्द का प्रयोग करना चाहें तो ईकारान्त नदी शब्द के समान कर सकते हैं सावित्री-सावित्र्या: (षष्ठी), सावित्र्यै - (चतुर्थी) इत्यादि पर यदि हम संस्कृत वाक्य में 'सावित्रीबाई' इस पूर्ण नाम का प्रयोग करना चाहें तो रूप बनाना सम्भव नहीं है क्योंकि अन्त में 'आ' तथा ई दो स्वर आ रहे हैं तो जिस प्रकार सावित्री में ई पूर्व 'त्र' स्वरविहीन हो रहा है उस प्रकार से 'सावित्रीबाई' में सम्भव नहीं है अत: ऐसे स्थानों पर पुल्लिंग में 'महोदय' शब्द तथा स्त्रीलिङ्ग में महोदया शब्द जोड़कर अकारान्त तथा आकारान्त शब्दों का प्रयोग किया जाता है। अत: सावित्रीबाई-महोदयाम् (द्वि.) सावित्रीबाई महोदयायै (चतुर्थी), सावित्रीमहोदयाया: (पञ्चमी-षष्ठी) इत्यादि प्रकार से प्रयोग किया जाएगा।
- हम इससे पहले भी 1-100 तक संस्कृत संख्याशब्द तो सीख ही चुके हैं तथा इन्हीं के प्रयोग द्वारा लम्बी संख्याएँ संस्कृत में कैसे लिखी और बोली जा सकती हैं! ये भी हम सीख चुके हैं आइये अब इनका पुनरभ्यास करते हैं-

  १८३१- तमे ख्रिस्ताब्दे सावित्री अजायत

  एकत्रिंशत्-अधिक अष्टादशशतम् तमे ख्रिस्ताब्दे सावित्री अजायत।

  अर्थात् हमें अन्त से प्रारम्भ करके अक्षर स्थान (Place Value) के आधार पर संख्या बतानी है- मध्य में अधिक का प्रयोग करते हुए।

  इसी प्रकार पाठ में आए अन्य संख्यात्मक शब्दों को संस्कृत में पढ़िए तथा अपने जन्मादि वर्ष का भी संस्कृत में अभ्यास कीजिए।

0851CH12

द्वादशः पाठः

कः रक्षति कः रक्षितः

[प्रस्तुत पाठ स्वच्छता तथा पर्यावरण सुधार को ध्यान में रखकर सरल संस्कृत में लिखा गया एक संवादात्मक पाठ है। हम अपने आस-पास के वातावरण को किस प्रकार स्वच्छ रखें तथा यह भी ध्यान रखें कि नदियों को प्रदूषित न करें, वृक्षों को न काटें, अपितु अधिकाधिक वृक्षारोपण करें और धरा को शस्यश्यामला बनाएँ। प्लास्टिक का प्रयोग कम करके पर्यावरण संरक्षण में योगदान करें। इन सभी बिन्दुओं पर इस पाठ में चर्चा की गई है। पाठ का प्रारंभ कुछ मित्रों की बातचीत से होता है, जो सायंकाल में दिन भर की गर्मी से व्याकुल होकर घर से बाहर निकले हैं-]

(ग्रीष्मर्तौ सायंकाले विद्युदभावे प्रचण्डोष्मणा पीडितः वैभवः गृहात् निष्क्रामति)

वैभवः – अरे परमिन्दर्! अपि त्वमपि विद्युदभावेन पीडितः बहिरागतः?

परमिन्दर् – आम् मित्र! एकतः प्रचण्डातपकालः अन्यतश्च विद्युदभावः परं बहिरागत्यापि पश्यामि यत् वायुवेगः तु सर्वथाऽवरुद्धः।

सत्यमेवोक्तम्

प्राणिति पवनेन जगत् सकलं, सृष्टिर्निखिला चैतन्यमयी।

क्षणमपि न जीव्यतेऽनेन विना, सर्वातिशायिमूल्यः पवनः॥

विनयः – अरे मित्र! शरीरात् न केवलं स्वेदबिन्दवः अपितु स्वेदधाराः इव प्रस्रवन्ति स्मृतिपथमायाति शुक्लमहोदयैः रचितः श्लोकः।

तप्तैर्वाताघातैरवितुं लोकान् नभसि मेघाः,

आरक्षिविभागजना इव समये नैव दृश्यन्ते॥

परमिन्दर् – आम् अद्य तु वस्तुतः एव–

निदाघतापतप्तस्य, याति तालु हि शुष्कताम्।
पुंसो भयार्दितस्येव, स्वेदवज्जायते वपुः॥

जोसेफः – मित्राणि! यत्र-तत्र बहुभूमिकभवनानां, भूमिगतमार्गाणाम्, विशेषतः मैट्रोमार्गाणांम्, उपरिगामिसेतूनाम् इत्यादीनां निर्माणाय वृक्षाः कर्त्यन्ते तर्हि अन्यत् किमपेक्ष्यते अस्माभिः? वयं तु विस्मृतवन्तः एव–

एकेन शुष्कवृक्षेण दह्यमानेन वह्निना।
दह्यते तद्वनं सर्वं कुपुत्रेण कुलं यथा॥

परमिन्दर् – आम् एतदपि सर्वथा सत्यम्। आगच्छन्तु नदीतीरं गच्छामः। तत्र चेत् काञ्चित् शान्तिं प्राप्तुं शक्ष्येम

(नदीतीरं गन्तुकामाः बालाः यत्र-तत्र अवकरभाण्डारं दृष्ट्वा वार्तालापं कुर्वन्ति)

जोसेफः – पश्यन्तु मित्राणि यत्र-तत्र प्लास्टिकस्यूतानि अन्यत् चावकरं प्रक्षिप्तमस्ति। कथ्यते यत् स्वच्छता स्वास्थ्यकरी परं वयं तु शिक्षिताः अपि अशिक्षित इवाचरामः अनेन प्रकारेण....

वैभवः – गृहाणि तु अस्माभिः नित्यं स्वच्छानि क्रियन्ते परं किमर्थं स्वपर्यावरणस्य स्वच्छतां प्रति ध्यानं न दीयते

विनयः – पश्य-पश्य उपरितः इदानीमपि अवकरः मार्गे क्षिप्यते।

(आहूय) महोदये! कृपां कुरु मार्गे एतत् तु सर्वथा अशोभनं कृत्यम्। अस्मद्सदृशेभ्यः बालेभ्यः भवतीसदृशैः एवं संस्कारा देयाः।

रोजलिन् – आम् पुत्र! सर्वथा सत्यं वदसि। क्षम्यन्ताम्। इदानीमेवागच्छामि।

(रोजलिन् आगत्य बालैः साकं स्वक्षिप्तमवकरं मार्गे विकीर्णमन्यदवकरं चापि सङ्गृह्य अवकरकण्डोले पातयति)

बाला: – एवमेव जागरूकतया एव प्रधानमन्त्रिमहोदयानां स्वच्छताऽभियानमपि गतिं प्राप्स्यति।

विनयः – पश्य पश्य तत्र धेनुः शाकफलानामावरणैः सह प्लास्टिकस्यूतमपि खादति। यथाकथञ्चित् निवारणीया एषा

(मार्गे कदलीफलविक्रेतारं दृष्ट्वा बालाः कदलीफलानि क्रीत्वा धेनुमाह्वयन्ति भोजयन्ति च, मार्गात् प्लास्टिकस्यूतानि चापसार्य पिहिते अवकरकण्डोले क्षिपन्ति)

परमिन्दर् – प्लास्टिकस्य मृत्तिकायां लयाभवात् अस्माकं पर्यावरणस्य कृते महती क्षतिः भवति। पूर्वं तु कार्पासेन, चर्मणा, लौहेन, लाक्षया, मृत्तिकया, काष्ठेन वा निर्मितानि वस्तूनि एव प्राप्यन्ते स्म। अधुना तत्स्थाने प्लास्टिकनिर्मितानि वस्तूनि एव प्राप्यन्ते

वैभवः – आम् घटिपट्टिका, अन्यानि बहुविधानि पात्राणि, कलमेत्यादीनि सर्वाणि तु प्लास्टिकनिर्मितानि भवन्ति।

जोसेफः – आम् अस्माभिः पित्रोः शिक्षकाणां सहयोगेन प्लास्टिकस्य विविधपक्षाः विचारणीयाः। पर्यावरणेन सह पशवः अपि रक्षणीयाः। (एवमेवालपन्तः सर्वे नदीतीरं प्राप्ताः, नदीजले निमज्जिताः भवन्ति गायन्ति च–

सुपर्यावरणेनास्ति जगतः
सुस्थितिः सखे।
जगति जायमानानां सम्भवः
सम्भवो भुवि॥

सर्वे – अतीवानन्दप्रदोऽयं जलविहारः।

विद्युदभावे	–	बिजली चले जाने पर
प्रचण्डोष्मणा	–	बहुत गर्मी से
(प्रचण्ड + ऊष्मणा)		
निष्क्रामति	–	निकलता है
अवरुद्धः	–	रुका हुआ है
स्वेदबिन्दवः	–	पसीने की बूँदें
स्वेदधाराः इव	–	पसीने की नदियाँ सी
प्रस्रवन्ति	–	बह रही हैं
निदाघतापतप्तस्य	–	ग्रीष्म के ताप से दुःखी मनुष्य का
पुंसो भयार्दितस्येव	–	भयभीत मनुष्य के समान
उपरिगामिसेतूनाम्	–	ऊर्ध्वगामी पुलों के
कर्त्यन्ते	–	काटे जा रहे हैं
वह्निना	–	आग से
दह्यते	–	जलाया जाता है
चेत्	–	शायद
अवकरभाण्डारम्	–	कूड़े के ढेर को
प्लास्टिकस्यूतानि	–	प्लास्टिक के लिफाफे

इवाचरामः (इव+आचरामः) – के समान व्यवहार करते हैं

क्षिप्यते – फेंका जा रहा है

आहूय – बुलाकर (आवाज़ लगा कर)

मार्गे भ्रमत्सु – रास्ते में चलने वालों पर

देयाः – देने योग्य

विकीर्णम् – बिखरा हुआ

सङ्गृह्य – इकट्ठा कर के

शाकफलानामावरणैः सह – सब्ज़ियों और फलों के छिलकों के साथ

पिहिते अवकरकण्डोले – ढके हुए कूड़ेदान में

कार्पासेन – कपास से

चर्मणा – चमड़े से

आलपन्तः – बात करते हुए

1. प्रश्नानामुत्तराणि एकपदेन लिखत–

(क) केन पीडितः वैभवः बहिरागतः?

(ख) भवनेत्यादीनां निर्माणाय के कर्त्यन्ते?

(ग) मार्गे किं दृष्ट्वा बालाः परस्परं वार्तालापं कुर्वन्ति?

(घ) वयं शिक्षिताः अपि कथमाचरामः?

कः रक्षति
कः रक्षितः

(ङ) प्लास्टिकस्य मृत्तिकायां लयाभावात् कस्य कृते महती क्षतिः भवति?

(च) अद्य निदाघतापतप्तस्य किं शुष्कतां याति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तराणि लिखत–

(क) परमिन्दर् गृहात् बहिरागत्य किं पश्यति?

(ख) अस्माभिः केषां निर्माणाय वृक्षाः कर्त्यन्ते?

(ग) विनयः रोजलिनम्माहूय किं वदति?

(घ) रोजलिन् आगत्य किं करोति?

(ङ) अन्ते जोसेफः पर्यावरणरक्षायै कः उपायः बोधयति?

3. रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) जागरूकतया एव स्वच्छताऽभियानमपि गतिं प्राप्स्यति।

(ख) धेनुः शाकफलानामावरणैः सह प्लास्टिकस्यूतमपि खादति स्म।

(ग) वायुवेगः सर्वथाऽवरुद्धः आसीत्।

(घ) सर्वे अवकरं सङ्गृह्य अवकरकण्डोले पातयन्ति।

(ङ) अधुना प्लास्टिकनिर्मितानि वस्तूनि प्रायः प्राप्यन्ते।

(च) सर्वे नदीतीरं प्राप्ताः प्रसन्नाः भवन्ति।

4. सन्धिविच्छेदं पूरयत–

(क) ग्रीष्मर्तौ – .... + ऋतौ

(ख) बहिरागत्य – बहिः + ...

(ग) काञ्चित् – .... + चित्

(घ) तद्वनम् – .... + वनम्

(ङ) कलमेत्यादीनि – कलम + ...

(च) अतीवानन्दप्रदोऽयम् – .... + आनन्दप्रदः + ...

5. **विशेषणपदैः सह विशेष्यपदानि योजयत–**

काञ्चित्	अवकरम्
स्वच्छानि	स्वास्थ्यकरी
पिहिते	क्षतिः
स्वच्छता	शान्तिम्
गच्छन्ति	गृहाणि
अन्यत्	अवकरकण्डोले
महती	मित्राणि

6. **शुद्धकथनानां समक्षम् आम् अशुद्धकथनानां समक्षं च न इति लिखत–**

(क) प्रचण्डोष्मणा पीडिताः बालाः सायंकाले एकैकं कृत्वा गृहाभ्यन्तरं गताः।

(ख) मार्गे मित्राणि अवकरभाण्डारं यत्र-तत्र विकीर्णं दृष्ट्वा वार्तालापं कुर्वन्ति।

(ग) अस्माभिः पर्यावरणस्वच्छतां प्रति प्रायः ध्यानं न दीयते।

(घ) वायुं विना क्षणमपि जीवितुं न शक्यते।

(ङ) रोजलिन् अवकरम् इतस्ततः प्रक्षेपणात् अवरोधयति बालकान्।

(च) एकेन शुष्कवृक्षेण दह्यमानेन वनं सुपुत्रेण कुलमिव दह्यते।

(छ) बालकाः धेनुं कदलीफलानि भोजयन्ति।

(ज) नदीजले निमज्जिताः बालाः प्रसन्नाः भवन्ति।

7. **घटनाक्रमानुसारं लिखत–**

(क) उपरितः अवकरं क्षेप्तुम् उद्यतां रोजलिन् बालाः प्रबोधयन्ति।

(ख) प्लास्टिकस्य विविधान् पक्षान् विचारयितुं पर्यावरणसंरक्षणेन पशूनेत्यादीन् रक्षितुं बालाः कृतनिश्चयाः भवन्ति।

(ग) गृहे प्रचण्डोष्मणा पीडितानि मित्राणि एकैकं कृत्वा गृहात् बहिरागच्छन्ति।

(घ) अन्ते बालाः जलविहारं कृत्वा प्रसीदन्ति।

(ङ) शाकफलानामावरणैः सह प्लास्टिकस्यूतमपि खादन्तीं धेनुं बालकाः कदलीफलानि भोजयन्ति।

(च) वृक्षाणां निरन्तरं कर्तनेन, ऊष्मावर्धनेन च दुःखिताः बालाः नदीतीरं गन्तुं प्रवृत्ताः भवन्ति।

(छ) बालैः सह रोजलिन् अपि मार्गे विकीर्णमवकरं यथास्थानं प्रक्षिपति।

(ज) मार्गे यत्र-तत्र विकीर्णमवकरं दृष्ट्वा पर्यावरणविषये चिन्तिताः बालाः परस्परं विचारयन्ति।

योग्यता-विस्तारः

भावविस्तारः

आज के युग में पर्यावरण जिस प्रकार प्रदूषित हो रहा है वह वास्तव में ही समाज के लिए चिन्ता का विषय है प्राचीनकाल में औद्योगीकरण के लिए विशाल कल-कारखाने नहीं थे, यातायात के लिए पैट्रोल, डीजल से चलने वाली इतनी अधिक गाड़ियाँ नहीं थीं, जनसंख्या इतनी नहीं थी कि कूड़े के ढेर लग जाएँ। खान-पान की चीज़ों में भी मिलावट नगण्य थी और सामाजिक चरित्र में भी सम्भवतः इतनी गिरावट नहीं आई थी जितनी आज आ गई है। आज प्रकृति और मानव दोनों की शुद्धता द्वारा पर्यावरण को संरक्षित करने की अत्यधिक आवश्यकता है अतः हम सभी को इस बात का ध्यान रखना होगा कि अपने आस-पास गन्दगी न फैलने दें, वृक्षों को न काटें अपितु अधिकाधिक वृक्षारोपण करें। प्लास्टिक का प्रयोग न करें तथा इन सभी विचारों को जन-जन तक पहुँचाएँ।

पर्यावरण संरक्षण से संबंधित निम्न श्लोकों को भी पढ़िए तथा स्मरण करके विद्यालय की प्रार्थना सभा में सुनाकर जनचेतना जगाइये-

पर्यावरणनाशेन, विरमेत् विरतो भवेत्।
मानवो मानवो भूत्वा, कुर्यात् प्रकृतिरक्षणम्।।
संरक्षेत् दूषितो न स्याल्लोकः मानवजीवनम्।
न कोऽपि कस्यचिद्नाशं, कुर्यादर्थस्य सिद्धये।।

भुक्त्वा यान्ति च पञ्चत्वं, दुष्प्लास्टिकमजैविकम्।
पशवोऽनुर्वरा भूमिर्जायते, ज्वालिते विषम्॥
प्लास्टिककृतवस्तूनां वस्तुवहनहेतवे।
परित्यज प्रयोगं भोः वस्त्रमाश्रय धारय॥
वदन् रुदन् तरोः कण्ठञ्छुष्कं दुःखेन संयुतम्।
पाहि मां पाहि मामुच्चैर्घोषं कुर्वन्ति पादपाः॥
पर्यावरणनाशेन नश्यन्ति सर्वजन्तवः।
पवनः दुष्टतां याति प्रकृतिर्विकृतायते॥

भाषाविस्तारः

संस्कृत में वाक्य में पहले 'अपि' लगाने से वाक्य प्रश्न वाचक हो जाता है। जैसे–अपि प्रविशामः? क्या हम भीतर चलें?

धातु-संयुक्त तुमुन् प्रत्यय के अनुस्वार का लोप करके उसके आगे कामा/कामः जोड़ने से अमुक कार्य करना चाहने वाली/चाहने वाला–यह मुहावरेदार प्रयोग होता है। जैसे–गन्तुकामा, वक्तुकामा, कर्त्तुकामः इत्यादि। इस प्रक्रिया के आधार पर नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करें–

(क) राम क्या कहना चाहता है?

(ख) क्रिस्तीना कहाँ जाना चाहती है?

(ग) वह करना क्या चाहता है?

0851CH13

त्रयोदशः पाठः

क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमिः

[प्रस्तुत पाठ्यांश डॉ. कृष्णचन्द्र त्रिपाठी द्वारा रचित हैं, जिसमे भारत के गौरव का गुणगान है। इसमें देश की खाद्यान्न सम्पन्नता, कलानुराग, प्राविधिक प्रवीणता, वन एवं सामरिक शक्ति की महनीयता को दर्शाया गया है। प्राचीन परम्परा, संस्कृति, आधुनिक मिसाइल क्षमता एवं परमाणु शक्ति सम्पन्नता के गीत द्वारा कवि ने देश की सामर्थ्यशक्ति का वर्णन किया है। छात्र संस्कृत के इन श्लोकों का सस्वर गायन करें तथा देश के गौरव को महसूस करें, इसी उद्देश्य से इन्हें यहाँ संकलित किया गया है।]

सुपूर्णं सदैवास्ति खाद्यान्नभाण्डं
नदीनां जलं यत्र पीयूषतुल्यम्।
इयं स्वर्णवद् भाति शस्यैर्धरेयं
क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमिः ।।1।।

त्रिशूलाग्निनागैः पृथिव्यस्त्रघोरैः
अणूनां महाशक्तिभिः पूरितेयम्।
सदा राष्ट्ररक्षारतानां धरेयम्
क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमिः ।।2।।

इयं वीरभोग्या तथा कर्मसेव्या
जगद्वन्दनीया च भूः देवगेया।
सदा पर्वणामुत्सवानां धरेयं
क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमिः ।।3।।

इयं ज्ञानिनां चैव वैज्ञानिकानां
विपश्चिज्जनानामियं संस्कृतानाम्।
बहूनां मतानां जनानां धरेयं
क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमिः ॥4॥

इयं शिल्पिनां यन्त्रविद्याधराणां
भिषक्शास्त्रिणां भूः प्रबन्धे युतानाम्।
नटानां नटीनां कवीनां धरेयं
क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमिः ॥5॥

वने दिग्गजानां तथा केसरीणां
तटीनामियं वर्तते भूधराणाम्।
शिखीनां शुकानां पिकानां धरेयं
क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमिः ॥6॥

पीयूषतुल्यम्	–	अमृत समान
भाति	–	सुशोभित होती है
शस्यैः	–	फसलों से
धरेयम्	–	धरा + इयम् = यह पृथ्वी
क्षितौ	–	क्षिति (पृथ्वी) पर
त्रिशूलाग्निनागैः पृथिव्यस्त्रघोरैः	–	त्रिशूल, अग्नि, नाग तथा पृथ्वी – चार मिसाइलों (अस्त्रों) के नाम

मेदिनी – पृथ्वी
पर्वणामुत्सवानाम् – पर्व और उत्सवों की
विपश्चिज्जनानाम् – विद्वज्जनों की
यन्त्रविद्याधराणाम् – यन्त्रविद्या को जानने वालों की
भिषक् – वैद्य, चिकित्सक
प्रबन्धे युतानाम् – 'प्रबन्धक' समुदाय प्रबन्ध कार्यों में लगे हुए
नट, नटी – अभिनेता, अभिनेत्री
केसरीणाम् [केश+रि+डी (औणादि)]– सिंहों की
तटीनाम् – नदियों की
भूधराणाम् – पर्वतों का
पिकानाम् – कोयलों का
शिखीनाम् – मोरों की

1. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत–

(क) इयं धरा कैः स्वर्णवद् भाति?

(ख) भारतस्वर्णभूमिः कुत्र राजते?

(ग) इयं केषां महाशक्तिभिः पूरिता?

(घ) इयं भूः कस्मिन् युतानाम् अस्ति?

(ङ) अत्र किं सदैव सुपूर्णमस्ति?

2. समानार्थकपदानि पाठात् चित्वा लिखत–

(क) पृथिव्याम् ....(क्षितौ/पर्वतेषु/त्रिलोक्याम्)

(ख) सुशोभते .... (लिखते/भाति/पिबति)

(ग) बुद्धिमताम् .... (पर्वणाम्/उत्सवानाम्/विपश्चिज्जनानाम्)

(घ) मयूराणाम् ....(शिखीनाम्/शुकानाम्/पिकानाम्)

(ङ) अनेकेषाम् ....(जनानाम्/वैज्ञानिकानाम्/बहूनाम्)

3. श्लोकांशमेलनं कृत्वा लिखत–

(क) त्रिशूलाग्निनागैः पृथिव्यास्त्रघोरैः	नदीनां जलं यत्र पीयूषतुल्यम्
(ख) सदा पर्वणामुत्सवानां धरेयम्	जगद्वन्दनीया च भूःदेवगेया
(ग) वने दिग्गजानां तथा केसरीणाम्	क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमिः
(घ) सुपूर्णं सदैवास्ति खाद्यान्नभाण्डम्	अणूनां महाशक्तिभिः पूरितेयम्
(ङ) इयं वीरभोग्या तथा कर्मसेव्या	तटीनामियं वर्तते भूधराणाम्

4. चित्रं दृष्ट्वा (पाठात्) उपयुक्तपदानि गृहीत्वा वाक्यपूर्तिं कुरुत–

(क) अस्मिन् चित्रे एका .... वहति।

(ख) नदी .... निःसरति।

(ग) नद्याः जलं .... भवति।

(घ) .... शस्यसेचनं भवति।

(ङ) भारतः .... भूमिः अस्ति।

5. चित्राणि दृष्ट्वा (मञ्जूषातः) उपयुक्तपदानि गृहीत्वा वाक्यपूर्तिं कुरुत–
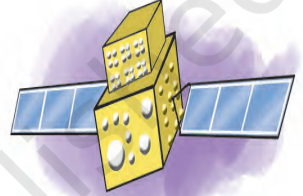
अस्त्राणाम्, भवति, अस्त्राणि, सैनिकाः, प्रयोगः, उपग्रहाणां

(क) अस्मिन् चित्रे ....दृश्यन्ते।

(ख) एतेषाम् अस्त्राणां .... युद्धे भवति।

(ग) भारतः एतादृशानां ....प्रयोगेण विकसितदेशः मन्यते।

(घ) अत्र परमाणुशक्तिप्रयोगः अपि ....।

(ङ) आधुनिकैः अस्त्रैः .... अस्मान् शत्रुभ्यः रक्षन्ति।

(च) .... सहायतया बहूनि कार्याणि भवन्ति।

6. (अ) चित्रं दृष्ट्वा संस्कृते पञ्चवाक्यानि लिखत–

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

(आ) चित्रं दृष्ट्वा संस्कृते पञ्चवाक्यानि लिखत–

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

7. अत्र चित्रं दृष्ट्वा संस्कृतभाषया पञ्चवाक्येषु प्रकृतेः वर्णनं कुरुत–

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

योग्यता-विस्तारः

प्राचीन काल में भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था, इसी भाव को ग्रहण कर कवि ने प्रस्तुत पाठ में भारतभूमि की प्रशंसा करते हुए कहा है कि आज भी यह भूमि विश्व में स्वर्णभूमि बनकर ही सुशोभित हो रही है।

कवि कहते हैं कि आज हम विकसित देशों की परम्परा में अग्रगण्य होकर मिसाइलों का निर्माण कर रहे हैं, परमाणु शक्ति का प्रयोग कर रहे हैं। इसी के साथ ही साथ हम 'उत्सवप्रियाः खलु मानवाः' नामक उक्ति को चरितार्थ भी कर रहे हैं कि 'अनेकता में एकता है हिंद की विशेषता' इसी आधार पर कवि के उद्‌गार हैं कि बहुत मतावलम्बियों के भारत में होने पर भी यहाँ ज्ञानियों, वैज्ञानिकों और विद्वानों की कोई कमी नहीं है। इस धरा ने सम्पूर्ण विश्व को शिल्पकार, इंजीनियर, चिकित्सक, प्रबंधक, अभिनेता, अभिनेत्री और कवि प्रदान किए हैं। इसकी प्राकृतिक सुषमा अद्‌भुत है। इस तरह इन पद्यों में कवि ने भारत के सर्वाधिक महत्त्व को उजागर करने का प्रयास किया है।

पाठ में पर्वों और उत्सवों की चर्चा की गई है ये समानार्थक होते हुए भी भिन्न हैं। पर्व एक निश्चित तिथि पर ही मनाए जाते हैं, जैसे-होली, दीपावली, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस इत्यादि। परन्तु उत्सव व्यक्ति विशेष के उद्‌गार एवं आह्लाद के द्योतक हैं। किसी के घर संतानोत्पत्ति उत्सव का रूप ग्रहण कर लेती है तो किसी को सेवाकार्य में प्रोन्नति प्राप्त कर लेना, यहाँ तक कि बिछुड़े हुए बंधु-बांधवों से अचानक मिलना भी किसी उत्सव से कम नहीं होता है।

0851CH14

चतुर्दशः पाठः

आर्यभटः

[भारतवर्ष की अमूल्य निधि है ज्ञान–विज्ञान की सुदीर्घ परम्परा। इस परम्परा को सम्पोषित किया प्रबुद्ध मनीषियों ने। इन्हीं मनीषियों में अग्रगण्य थे आर्यभट। दशमलव पद्धति आदि के प्रारम्भिक प्रयोक्ता आर्यभट ने गणित को नयी दिशा दी। इन्हें एवं इनके प्रवर्तित सिद्धान्तों को तत्कालीन रूढिवादियों का विरोध झेलना पड़ा। वस्तुतः गणित को विज्ञान बनाने वाले तथा गणितीय गणना पद्धति के द्वारा आकाशीय पिण्डों की गति का प्रवर्तन करने वाले ये प्रथम आचार्य थे। आचार्य आर्यभट के इसी वैदुष्य का उद्घाटन प्रस्तुत पाठ में है।]

पूर्वदिशायाम् उदेति सूर्यः पश्चिमदिशायां च अस्तं गच्छति इति दृश्यते हि लोके। परं न अनेन अवबोध्यमस्ति यत्सूर्यो गतिशील इति। सूर्योऽचलः पृथिवी च चला या स्वकीये अक्षे घूर्णति इति साम्प्रतं सुस्थापितः सिद्धान्तः। सिद्धान्तोऽयं प्राथम्येन येन प्रवर्तितः, स आसीत् महान् गणितज्ञः ज्योतिर्विच्च आर्यभटः। पृथिवी स्थिरा वर्तते इति परम्परया प्रचलिता रूढिः तेन प्रत्यादिष्टा। तेन उदाहृतं यद् गतिशीलायां नौकायाम् उपविष्टः मानवः नौकां स्थिरामनुभवति, अन्यान् च पदार्थान् गतिशीलान् अवगच्छति। एवमेव गतिशीलायां पृथिव्याम् अवस्थितः मानवः पृथिवीं स्थिरामनुभवति सूर्यादिग्रहान् च गतिशीलान् वेत्ति।

476 तमे ख्रिस्ताब्दे (षट्सप्तत्यधिकचतुःशततमे वर्षे) आर्यभटः जन्म लब्धवानिति तेनैव विरचिते 'आर्यभटीयम्' इत्यस्मिन् ग्रन्थे उल्लिखितम्। ग्रन्थोऽयं तेन त्रयोविंशतितमे

वयसि विरचितः। ऐतिहासिकस्रोतोभिः ज्ञायते यत् पाटलिपुत्रं निकषा आर्यभटस्य वेधशाला आसीत्। अनेन इदम् अनुमीयते यत् तस्य कर्मभूमिः पाटलिपुत्रमेव आसीत्।

आर्यभटस्य योगदानं गणितज्योतिषा सम्बद्धं वर्तते यत्र संख्यानाम् आकलनं महत्त्वम् आदधाति। आर्यभटः फलितज्योतिषशास्त्रे न विश्वसिति स्म। गणितीयपद्धत्या कृतम् आकलनमाधृत्य एव तेन प्रतिपादितं यद् ग्रहणे राहु-केतुनामकौ दानवौ नास्ति कारणम्। तत्र तु सूर्यचन्द्रपृथिवी इति त्रीणि एव कारणानि। सूर्यं परितः भ्रमन्त्याः पृथिव्याः, चन्द्रस्य परिक्रमापथेन संयोगाद् ग्रहणं भवति। यदा पृथिव्याः छायापातेन चन्द्रस्य प्रकाशः अवरुध्यते तदा चन्द्रग्रहणं भवति। तथैव पृथ्वीसूर्ययोः मध्ये समागतस्य चन्द्रस्य छायापातेन सूर्यग्रहणं दृश्यते।

समाजे नूतनानां विचाराणां स्वीकरणे प्रायः सामान्यजनाः काठिन्यमनुभवन्ति। भारतीयज्योतिःशास्त्रे तथैव आर्यभटस्यापि विरोधः अभवत्। तस्य सिद्धान्ताः उपेक्षिताः। स पण्डितम्मन्यानाम् उपहासपात्रं जातः। पुनरपि तस्य दृष्टिः कालातिगामिनी दृष्टा। आधुनिकैः वैज्ञानिकैः तस्मिन्, तस्य च सिद्धान्ते समादरः प्रकटितः। अस्मादेव कारणाद् अस्माकं प्रथमोपग्रहस्य नाम आर्यभट इति कृतम्।

वस्तुतः भारतीयायाः गणितपरम्परायाः अथ च विज्ञानपरम्परायाः असौ एकः शिखरपुरुषः आसीत्।

2022-23

लोके	–	संसार में
अवबोध्यम्	–	समझने योग्य, जानने योग्य, जानना चाहिए
अचलः	–	स्थिर, गतिहीन
चला	–	अस्थिर, गतिशील
स्वकीये	–	अपने
अक्षे	–	धुरी पर
घूर्णति	–	घूमती है
सुस्थापितः	–	भली–भाँति स्थापित
प्राथम्येन	–	सर्वप्रथम
ज्योतिर्विद्	–	ज्योतिषी
रूढिः	–	प्रचलित प्रथा, रिवाज
प्रत्यादिष्टा (प्रति+आदिष्टा)	–	खण्डन किया
खिस्ताब्दे (खिस्त+अब्दे)	–	ईस्वी में
षट्सप्ततिः	–	छिहत्तर
वयसि	–	आयु में, अवस्था में, उम्र में
निकषा	–	निकट
वेधशाला	–	ग्रह, नक्षत्रों को जानने की प्रयोगशाला
आकलनम्	–	गणना

आदधाति	–	रखता है
भ्रमन्त्याः	–	घूमने वाली की, घूमती हुई की
छायापातेन	–	छाया पड़ने से
अवरुध्यते	–	रुक जाता है
अपरत्र	–	दूसरी ओर
अवस्थितः	–	स्थित
विश्वसिति स्म	–	विश्वास करता था
प्रतिरोधस्य	–	रोकने का
पण्डितम्मन्यानाम्	–	स्वयं को भारी विद्वान् मानने वालों का
कालातिगामिनी	–	समय को लाँघने वाली

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) सूर्यः कस्यां दिशायाम् उदेति?

(ख) आर्यभटस्य वेधशाला कुत्र आसीत्?

(ग) महान् गणितज्ञः ज्योतिर्विच्च कः अस्ति?

(घ) आर्यभटेन कः ग्रन्थः रचितः?

(ङ) अस्माकं प्रथमोपग्रहस्य नाम किम् अस्ति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(क) कः सुस्थापितः सिद्धान्तः?

(ख) चन्द्रग्रहणं कथं भवति?

(ग) सूर्यग्रहणं कथं दृश्यते?

(घ) आर्यभटस्य विरोधः किमर्थमभवत्?

(ङ) प्रथमोपग्रहस्य नाम आर्यभटः इति कथं कृतम्?

3. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -

(क) सूर्यः पश्चिमायां दिशायाम् अस्तं गच्छति।

(ख) पृथिवी स्थिरा वर्तते इति परम्परया प्रचलिता रूढिः।

(ग) आर्यभटस्य योगदानं गणितज्योतिष-सम्बद्धं वर्तते।

(घ) समाजे नूतनविचाराणां स्वीकरणे प्रायः सामान्यजनाः काठिन्यमनुभवन्ति।

(ङ) पृथ्वीसूर्ययोः मध्ये चन्द्रस्य छाया पातेन सूर्य-ग्रहणं भवति।

4. मञ्जूषातः पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

नौकाम्	पृथिवी	तदा	चला	अस्तं

(क) सूर्यः पूर्वदिशायाम् उदेति पश्चिमदिशायां च .... गच्छति।

(ख) सूर्यः अचलः पृथिवी च ....।

(ग) .... स्वकीये अक्षे घूर्णति।

(घ) यदा पृथिव्याः छायापातेन चन्द्रस्य प्रकाशः अवरुध्यते .... चन्द्रग्रहणं भवति।

(ङ) नौकायाम् उपविष्टः मानवः .... स्थिरामनुभवति।

5. सन्धिविच्छेदं कुरुत-

ग्रन्थोऽयम् – .... + ...

सूर्याचलः – .... + ...

तथैव – .... + ...

कालातिगामिनी – .... + ...

प्रथमोपग्रहस्य – .... + ...

6. (अ) अधोलिखितपदानां विपरीतार्थकपदानि लिखत-

उदय:	....
अचल:	....
अन्धकार:	....
स्थिर:	....
समादर:	....
आकाशस्य	....

(आ) अधोलिखितपदानां समानार्थकपदानि पाठात् चित्वा लिखत-

संसारे	....
इदानीम्	....
वसुन्धरा	....
समीपम्	....
गणनम्	....
राक्षसौ	....

7. अधोलिखितानि पदानि आधृत्य वाक्यानि रचयत-

साम्प्रतम्	–	....
निकषा	–	....
परित:	–	....
उपविष्ट:	–	....
कर्मभूमि:	–	....
वैज्ञानिक:	–	....

योग्यता-विस्तारः

आर्यभट को अश्मकाचार्य नाम से भी जाना जाता है। यही कारण है कि इनके जन्मस्थान के विषय में विवाद है। कोई इन्हें पाटलिपुत्र का कहते हैं तो कोई महाराष्ट्र का।

आर्यभट ने दशमलव पद्धति का प्रयोग करते हुए π (पाई) का मान निर्धारित किया। इन्होंने दशमलव के बाद के चार अंकों तक π के मान को निकाला। इनकी दृष्टि में π का मान है 3.1416 । आधुनिक गणित में π का मान, दशमलव के बाद सात अंकों तक जाना जा सका है, तद्नुसार π = 3.1416926 ।

भारतीयज्योतिषशास्त्र–वैदिक युग में यज्ञ के काल अर्थात् शुभ मुहूर्त के ज्ञान के लिए ज्योतिषशास्त्र का उद्भव हुआ। कालान्तर में इसके अन्तर्गत ग्रहों का संचार, वर्ष, मास, पक्ष, वार, तिथि, घंटा आदि पर गहन विचार किया जाने लगा। लगध, आर्यभट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, बालगंगाधर तिलक, रामानुजन् आदि हमारे देश के प्रमुख ज्योतिषशास्त्री हैं। आर्यभटीयम्, सौरसिद्धान्तः, बृहत्संहिता, लीलावती, पञ्चसिद्धान्तिका आदि ज्योतिष के प्रमुख संस्कृत ग्रन्थ हैं।

आर्यभटीयम्–आर्यभट ने 499 ई. में इस ग्रन्थ की रचना की थी। यह ग्रन्थ 20 आर्याछन्दों में निबद्ध है। इसमें ग्रहों की गणना के लिए कलि संवत् (499 ई. में 3600 कलि संवत्) को निश्चित किया गया है।

गणितज्योतिष–संख्या के द्वारा जहाँ काल की गणना हो, वह गणितज्योतिष है। ज्योतिषशास्त्र की तीन विधाओं यथा–सिद्धान्त, फलित एवं गणित में यह सर्वाधिक प्रमुख है।

फलितज्योतिष—इसके अन्तर्गत ग्रह नक्षत्रों आदि की स्थिति के आधार पर भाग्य, कर्म आदि का विवेचन किया जाता है।

वेधशाला—ग्रह, नक्षत्र आदि की गति, स्थिति की जानकारी जहाँ गणना तथा यान्त्रिक विधि के आधार पर ली जाये वह वेधशाला है। यथा–जन्तर–मन्तर।

परियोजना-कार्यम्

* योग्यता विस्तार में उल्लिखित विद्वानों की कृतियों के नाम का सङ्कलन करें।
* योग्यता विस्तार में उद्धृत पुस्तकों के लेखक का नाम बताएँ।
* आर्यभट के अतिरिक्त कुछ अन्य गणितज्ञों के नाम तथा उनके कार्यों की सूची तैयार करें।

0851CH15

पञ्चदशः पाठः

प्रहेलिकाः

[पहेलियाँ मनोरञ्जन की प्राचीन विधा है। ये प्रायः विश्व की सारी भाषाओं में उपलब्ध हैं। संस्कृत के कवियों ने इस परम्परा को अत्यन्त समृद्ध किया है। पहेलियाँ जहाँ हमें आनन्द देती हैं, वहीं समझ-बूझ की हमारी मानसिक व बौद्धिक प्रक्रिया को तीव्रतर बनाती हैं। इस पाठ में संस्कृत प्रहेलिका (पहेली) बूझने की परम्परा के कुछ रोचक उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।]

कस्तूरी जायते कस्मात्?
को हन्ति करिणां कुलम्?
किं कुर्यात् कातरो युद्धे?
मृगात् सिंहः पलायते ।।1।।

सीमन्तिनीषु का शान्ता?
राजा कोऽभूत् गुणोत्तमः?
विद्वद्भिः का सदा वन्द्या?
अत्रैवोक्तं न बुध्यते ।।2।।

कं सञ्जघान कृष्णः?
का शीतलवाहिनी गङ्गा?
के दारपोषणरताः?
कं बलवन्तं न बाधते शीतम् ।।3।।

वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः
त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः।
त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी
जलं च बिभ्रन्न घटो न मेघः ।।4।।

भोजनान्ते च किं पेयम्?
जयन्तः कस्य वै सुतः?
कथं विष्णुपदं प्रोक्तम्?
तक्रं शक्रस्य दुर्लभम् ॥5॥

प्रहेलिकानामुत्तरान्वेषणाय सङ्केताः

प्रथमा प्रहेलिका	–	अन्तिमे चरणे क्रमशः त्रयाणां प्रश्नानां त्रिभिः पदैः उत्तरं दत्तम्।
द्वितीया प्रहेलिका	–	प्रथम–द्वितीय–तृतीय–चरणेषु प्रथमस्य वर्णस्य अन्तिमवर्णेन संयोगात् उत्तरं प्राप्यते।
तृतीया प्रहेलिका	–	प्रतिऽचरणे प्रथमद्वितीययोः प्रथमत्रयाणां वा वर्णानां संयोगात् तस्मिन् चरणे प्रस्तुतस्य प्रश्नस्य उत्तरं प्राप्यते।
चतुर्थप्रहेलिकायाः उत्तरम्	–	नारिकेलफलम्।
पञ्चमप्रहेलिकायाः उत्तरम्	–	प्रथम–प्रहेलिकावत्।

हन्ति	–	मारता/मारती है
कातरः	–	कमजोर
सीमन्तिनीषु	–	नारियों में
कोऽभूत् (कः+अभूत्)	–	कौन हुआ
सञ्जघान	–	मारा
कंसञ्जघान (कंसं+जघान)	–	कंस को मारा
शीतलवाहिनी	–	ठंडी धारा वाली

काशीतलवाहिनी	–	काशी की भूमि पर बहने वाली
दारपोषणरताः	–	पत्नी के पोषण में संलग्न
केदारपोषणरताः	–	खेत के कार्य में संलग्न
कंबलवन्तम्	–	वह व्यक्ति जिसके पास कंबल है
वृक्षाग्रवासी (वृक्ष+अग्रवासी)	–	पेड़ के ऊपर रहने वाला
पक्षिराजः	–	पक्षियों का राजा (गरुड़)
त्रिनेत्रधारी	–	तीन नेत्रों वाला (शिव)
शूलपाणिः	–	जिनके हाथ में त्रिशूल है (शंकर)
त्वग्	–	त्वचा, छाल
बिभ्रन्	–	धारण करता हुआ
विष्णुपदम्	–	स्वर्ग, मोक्ष
तक्रम्	–	छाछ, मठा
शक्रस्य	–	इन्द्र का

अभ्यासः

1. श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) सीमन्तिनीषु का .... राजा .... गुणोत्तमः।

(ख) कं सञ्जघान .... का .... गङ्गा?

(ग) के .... कं .... न बाधते शीतम्।।

(घ) वृक्षाग्रवासी न च .... न च शूलपाणिः।

2. श्लोकांशान् योजयत–

क	ख
किं कुर्यात् कातरो युद्धे	अत्रैवोक्तं न बुध्यते।

विद्वद्भिः का सदा वन्द्या — तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्।
कं सञ्जघान कृष्णः — मृगात् सिंहः पलायते।
कथं विष्णुपदं प्रोक्तं — काशीतलवाहिनी गङ्गा।

3. **उपयुक्तकथनानां समक्षम् 'आम्' अनुपयुक्तकथनानां समक्षं न इति लिखत–**

यथा– सिंहः करिणां कुलं हन्ति। | आम् |
(क) कातरो युद्धे युद्ध्यते। | |
(ख) कस्तूरी मृगात् जायते। | |
(ग) मृगात् सिंहः पलायते। | |
(घ) कंसः जघान कृष्णम्। | |
(ङ) तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्। | |
(च) जयन्तः कृष्णस्य पुत्रः। | |

4. **सन्धिविच्छेदं पूरयत–**

(क) करिणां कुलम् – .... + ...
(ख) कोऽभूत् – .... + ...
(ग) अत्रैवोक्तम् – .... + ...
(घ) वृक्षाग्रवासी – .... + ...
(ङ) त्वग्वस्त्रधारी – .... + ...
(च) बिभ्रन्न – .... + ...

5. **अधोलिखितानां पदानां लिङ्गं विभक्तिं वचनञ्च लिखत–**

	पदानि	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
यथा–	करिणाम्	पुँल्लिङ्गम्	षष्ठी	बहुवचनम्

प्रहेलिका:

कस्तूरी	....	....	....
युद्धे	....	....	....
सीमन्तिनीषु	....	....	....
बलवन्तम्	....	....	....
शूलपाणिः	....	....	....
शक्रस्य	....	....	....

6. (अ) विलोमपदानि योजयत-

जायते	शान्ता
वीरः	पलायते
अशान्ता	म्रियते
मूर्खैः	कातरः
अत्रैव	विद्वद्भिः
आगच्छति	तत्रैव

(आ) समानार्थकपदं चित्वा लिखत-

(क) करिणाम् ....। (अश्वानाम्/गजानाम्/गर्दभानाम्)

(ख) अभूत् ....। (अचलत्/अहसत्/अभवत्)

(ग) वन्द्या ....। (वन्दनीया/स्मरणीया/कर्तनीया)

(घ) बुध्यते ....। (लिख्यते/अवगम्यते/पठ्यते)

(ङ) घटः ....। (तडागः/नलः/कुम्भः)

(च) सञ्जघान ....। (अमारयत्/अखादत्/अपिबत्)

7. कोष्ठकान्तर्गतानां पदानामुपयुक्तविभक्तिप्रयोगेन अनुच्छेदं पूरयत-

एकः काकः .... (आकाश) डयमानः आसीत्। तृषार्तः सः .... (जल) अन्वेषणं करोति। तदा सः .... (घट) अल्पं .... (जल) पश्यति। सः .... (उपल) आनीय .... (घट) पातयति। जलं .... (घट) उपरि आगच्छति। .... (काक) सानन्दं जलं पीत्वा तृप्यति।

योग्यता-विस्तारः

प्रस्तुत पाठ में दी गयी पहेलियों के अतिरिक्त कुछ अन्य पहेलियाँ अधोलिखित हैं। उन्हें पढ़कर स्वयं समझने की कोशिश करें और ज्ञानवर्धन करें यदि न समझ पायें तो उत्तर देखें।

(क) चक्री त्रिशूली न हरो न विष्णुः।
महान् बलिष्ठो न च भीमसेनः।
स्वच्छन्दगामी न च नारदोऽपि
सीतावियोगी न च रामचन्द्रः॥

(ख) न तस्यादिर्न तस्यान्तः मध्ये यस्तस्य तिष्ठति।
तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद्वद॥

(ग) अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः॥

उत्तर-(क) वृषभः, (ख) नयनम्, (ग) पत्रम्

परिशिष्टम्

सन्धिः

पूर्वपदस्य अन्तिमवर्णेन समम् उत्तरपदस्य पूर्ववर्णस्य मेलनेन यत्परिवर्तनं भवति तत्सन्धिः इति।

यथा– विद्या + आलयः
= विद्य् आ + आ लयः
= विद्यालयः

एवमेव यदि + अपि = यद्यपि कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः

सामान्यतः सन्धिः त्रिविधः, तद्यथा–

(क) स्वरसन्धिः अच्सन्धिः वा
(ख) व्यञ्जनसन्धिः हल्सन्धिः वा
(ग) विसर्गसन्धिः

(क) **स्वरसन्धिः** – स्वरवर्णेन सह स्वरवर्णस्य मेलनं स्वर-सन्धिः कथ्यते। संस्कृतभाषायां स्वीकृताः स्वरवर्णाः इमे सन्ति–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ। स्वरसन्धौ एतेषां परस्परमेलनं भवति। अत्र केचिद् विशिष्टाः सन्धयः उल्लेखनीयाः–

(*i*) **दीर्घसन्धिः** – अ, इ, उ, ऋ ह्रस्वेभ्यो दीर्घेभ्यो वेति वर्णेभ्यः परम् अ, इ, उ, ऋ वेति ह्रस्वाः दीर्घाः वा वर्णाः भवन्ति चेत्, तयोः मेलनेन दीर्घः भवति। (सूत्रम्–अकः सवर्णे दीर्घः)

उदाहरणानि– मुर + अरिः = मुरारिः
पाठ + आरम्भः = पाठारम्भः
दक्षिण + अयनम् = दक्षिणायनम्
स्वराज्य + आन्दोलनम् = स्वराज्यान्दोलनम्
कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः

मुनि + ईश्वरः = मुनीश्वरः

मही + इन्द्रः = महीन्द्रः

मही + ईश्वरः = महीश्वरः

भानु + उदयः = भानूदयः

लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः

वधू + उदयः = वधूदयः

पितृ + ऋणम् = पितॄणम्

सामान्य-प्रक्रिया

अ + अ = आ	इ + इ = ई	उ + उ = ऊ	ऋ + ऋ = ॠ
अ + आ = आ	इ + ई = ई	उ + ऊ = ऊ	ऌ + ऌ = ॡ
आ + अ = आ	ई + इ = ई	ऊ + उ = ऊ	
आ + आ = आ	ई + ई = ई	ऊ + ऊ = ऊ	

(*ii*) **यण्सन्धिः** – इ, उ, ऋ, ऌ वेति वर्णस्य पश्चात् भिन्नस्वरवर्णः भवति चेत् इ, उ, ऋ, ऌ इत्येषां स्थाने क्रमशः य्, व्, र्, ल् आदेशः भवति। (सूत्रम्-इको यणचि)

उदाहरणानि-

यदि + अपि = यद्यपि

मधु + अरि = मध्वरिः

वधू + आगमनम् = वध्वागमनम्

पितृ + आदेशः = पित्रादशः

ऌ + आकृतिः = लाकृतिः

सामान्य-प्रक्रिया

इ/ई + अ, आ, उ, ऊ, ऋ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ = य्

उ/ऊ + अ, आ, इ, ई, ऋ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ = व्

ऋ/ॠ + अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ = र्

लृ/लृ + अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ = ल्

(*iii*) **गुणसन्धिः** – अ, आ इत्यनयोः पश्चात् इ, उ, ऋ, ऌ वेति वर्णः आगच्छति चेत्, क्रमशः ए, ओ, अर्, अल् वा भवति। (सूत्रम्-आद्गुणः)

उदाहरणानि–

देव + इन्द्रः = देवेन्द्रः

देव + ईशः = देवेशः

पर + उपकारः = परोपकारः

एक + ऊनः = एकोनः

महा + ऊर्मिः = महोर्मिः

देव + ऋषिः = देवर्षिः

तव + लृकारः = तवल्कारः

सामान्य-प्रक्रिया

अ/आ + इ, ई = ए

अ/आ + उ, ऊ = ओ

अ/आ + ऋ = अर्

अ/आ + लृ = अल्

(*iv*) **वृद्धिसन्धिः** – अ/आ इत्यनयोः पश्चात् ए/ऐ, ओ/औ वेति वर्णः आगच्छति चेत्, क्रमशः ऐ, औ वा भवति। (सूत्रम्-वृद्धिरेचि)

उदाहरणानि–

एक + एकम् = एकैकम्

देव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्

गङ्गा + ओघः = गङ्गौघः

महा + ओषधिः = महौषधिः

सामान्य-प्रक्रिया

अ/आ + ए, ऐ = ऐ

अ/आ + ओ, औ = औ

(*v*) **अयादिसन्धिः** – ए, ऐ, ओ, औ वेति वर्णस्य पश्चात् कोऽपि स्वरवर्णः आगच्छति चेत्, तत्स्थाने क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् वा आदेशः भवति। (सूत्रम्-एचोऽयवायावः)

उदाहरणानि–

ने + अनम् = नयनम्

गै + अकः = गायकः

पो + अनम् = पवनम्

पौ + अकः = पावकः

सामान्य–प्रक्रिया

ए	+	स्वरवर्णाः	=	अय्
ऐ	+	स्वरवर्णाः	=	आय्
ओ	+	स्वरवर्णाः	=	अव्
औ	+	स्वरवर्णाः	=	आव्

कारकम्

वाक्ये क्रियायाः सद्यः अन्वयः येन पदेन शब्देन वा सह भवति तत्पदं कारकं भवति। कारकाणाम् अर्थं प्रकाशयितुं येषां प्रत्ययानां संयोजनं शब्दैः सह भवति ते (प्रत्ययाः) कारकविभक्तयः भवन्ति।

सामान्यतः विभक्तिः द्विविधा–

(*i*) कारकविभक्तिः (*ii*) उपपदविभक्तिः

कारकविभक्तिः – कारकद्वारा प्रयुक्तविभक्तिः कारकविभक्तिः भवति। यथा–बालकः विद्यालयं गच्छति। अत्र बालकः इत्यत्र कर्तृकारकमिति प्रथमा विभक्तिः। विद्यालयम् इत्यत्र कर्मकारकमिति द्वितीया विभक्तिः।

उपपदविभक्तिः – पदम् आश्रित्य या विभक्तिः सा उपपद-विभक्तिः। यथा–गुरवे नमः। अत्र 'नमः' इति पदस्य प्रयोगेण चतुर्थी विभक्तिः।

अभितः – ग्रामम् अभितः पर्वताः सन्ति।

परितः – ग्रामं परितः उद्यानम् अस्ति।

उभयतः – विद्यालयम् उभयतः पुष्पवाटिका।

सर्वतः – पुष्पवाटिकां सर्वतः वृक्षाः सन्ति।

सह – शशाङ्केण सह रोहिणी गृहं गतवती।

साकं – मया साकं त्वं गच्छसि।

समम् – त्वया समम् अहं गच्छामि।

सार्धं – प्रधानमन्त्रिणा सार्धं मन्त्रिणः अपि गतवन्तः।

अलम् – अलम् विवादेन। अलं श्रमेण। रामः रावणाय अलम्।

नमः – गुरवे नमः।

स्वाहा – अग्नये स्वाहा।

स्वधा – पितृभ्यः स्वधा।

वषट् – देवतायै वषट्।

उपसर्गः

धातोः पूर्वम् उपसर्गान् योजयित्वा वयं नूतनक्रियापदानां निर्माणं कुर्मः। उपसर्गाः साधारणतः द्वाविंशतिः (22) संख्यकाः सन्ति, तद्यथा–प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निर्, निस्, दुर्, दुस्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप। उपसर्गयोगेन धात्वर्थः क्वचित् परिवर्तते। अतः कथ्यते–

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
विहारहारसंहारप्रहारपरिहारवत्॥

यथा– वि + हृ = विहरति

सम् + हृ = संहरति

उप + हृ = उपहरति

परि + हृ = परिहरति

प्रत्ययः

विभक्तिरहितस्य मूलशब्दस्य अन्ते, अर्थयुतं शब्दं प्रतिपादयितुं यः शब्दः वर्णो वा प्रयुज्यते सः प्रत्ययः कथ्यते। विभक्तिरहितः मूलशब्दः संस्कृतव्याकरणे प्रकृतिः उच्यते। प्रकृतिरियं द्विविधा, तद्यथा–धातुः प्रातिपदिकञ्च।

एवं धातोः प्रातिपदिकात् च अनन्तरं यः वर्णः प्रयुज्यते सः प्रत्ययः भवति। यथा–'रामः' इति शब्दे 'राम' प्रातिपदिकः अस्ति, विसर्गः (सु) च प्रत्ययो वर्तते। तथैव 'पठित्वा' इति शब्दे पठ् इति धातुः वर्तते क्त्वा च प्रत्ययः इति।

प्रत्ययाः पञ्चविधाः भवन्ति, तद्यथा–विभक्तिः, कृत्, तद्धितः, स्त्रीप्रत्ययः, धात्ववयवश्च। अत्र इमे प्रत्ययाः अपि अवबोधनीयाः।

(क) **विभक्तिः** – धातूनाम् अनन्तरं 'ति, तः, न्ति'–प्रभृतयः प्रत्ययाः प्रातिपदिकानां च अनन्तरं सु–औ–जस्–प्रभृतयः प्रत्ययाः विभक्ति–प्रत्ययाः भवन्ति।

यथा– राम + सु = रामः (प्रातिपदिकेन निष्पन्नः)

गम् + ति = गच्छति (धातुना निष्पन्नः)

पठ् + न्ति = पठन्ति (धातुना निष्पन्नः)

(ख) **कृत्** – धातोः पश्चात् प्रयुक्ताः प्रत्ययाः कृत्प्रत्ययाः भवन्ति।

यथा– पठ् + ल्युट् = पठनम्

(ग) **तद्धितः** – संज्ञायाः सर्वनाम्नश्च पश्चात् प्रयुक्ताः प्रत्ययाः तद्धिताः भवन्ति।

यथा– शिव + अण् = शैवः।

(घ) **स्त्रीप्रत्ययः** – पुंलिङ्गशब्दान् स्त्रीलिङ्गेषु परिवर्तितुं ये प्रत्ययाः प्रयोगे व्यवह्रियन्ते ते स्त्रीप्रत्ययाः सन्ति।

यथा– चतुर + टाप् = चतुरा

दातृ + ङीप् = दात्री

(ङ) **धात्ववयवः** – धातोः विभक्तेश्च मध्ये सन्-शप्-णिच्-प्रभृतयः प्रत्ययाः धात्ववयवाः भवन्ति।

यथा– पठ् + णिच् + तिप् = पाठयति

आङ्लभाषायां प्रत्ययः इति शब्दस्य कृते Suffix इति शब्दो वर्तते। केचन प्रमुखाः व्यावहारिकाश्च प्रत्ययाः सन्ति – क्त्वा, तुमुन्, शतृ, शानच्, तव्यत्, अनीयर्, क्त, क्तवतु, घञ्, टाप्, ल्युट्, णिच्, ल्यप्, इत्यादयः।

कानिचन उदाहरणानि

क्त्वा – गम् + क्त्वा = गत्वा = जाकर
पठ् + क्त्वा = पठित्वा = पढ़कर
हस् + क्त्वा = हसित्वा = हँसकर

> अहं पुस्तकं पठित्वा गृहं गमिष्यामि।

ल्यप् – परि + त्यज् + ल्यप् = परित्यज्य = छोड़कर
वि + हस् = ल्यप् = विहस्य = हँसकर
उप + गम् + ल्यप् = उपगम्य = समीप जाकर

> श्यामः गृहं परित्यज्य वनं गतवान्।

तुमुन् – नी + तुमुन् = नेतुम् = लाने के लिये
गम् + तुमुन् = गन्तुम् = जाने के लिये
पठ् + तुमुन् = पठितुम् = पढ़ने के लिये
चल् + तुमुन् = चलितुम् = चलने के लिये

> लता पुस्तकं पठितुं पुस्तकालयं गच्छति।
>
> अहं फलं नेतुम् आपणं गमिष्यामि।

शब्दरूपाणि

सर्वनाम-शब्दः

अस्मद्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

यत्

पुँल्लिङ्गे

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

स्त्रीलिङ्गे

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

नपुंसकलिङ्गे

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

इदम्

पुँल्लिङ्गे

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

स्त्रीलिङ्गे

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

नपुंसकलिंङ्गे

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्, एनत्	इमे, एने	इमानि, एनानि
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

विशेषः – सर्वनामशब्दानां सम्बोधने रूपाणि न भवन्ति।

ऋकारान्त-स्त्रीलिङ्गः

मातृ (माता)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन!	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः!

स्वसृ (बहन)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः
तृतीया	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
चतुर्थी	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
पञ्चमी	स्वसुः	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
षष्ठी	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसॄणाम्
सप्तमी	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
सम्बोधन!	हे स्वसः!	हे स्वसारौ!	हे स्वसारः!

नकारान्त-पुँल्लिङ्गः
राजन् (राजा)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन!	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजानः!

धातु रूपाणि

खाद् (खाना)
लट्लकारः (वर्तमानकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	खादति	खादतः	खादन्ति
मध्यमपुरुषः	खादसि	खादथः	खादथ
उत्तमपुरुषः	खादामि	खादावः	खादामः

लृट्लकारः (भविष्यत्कालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	खादिष्यति	खादिष्यतः	खादिष्यन्ति

मध्यमपुरुषः	खादिष्यसि	खादिष्यथः	खादिष्यथ
उत्तमपुरुषः	खादिष्यामि	खादिष्यावः	खादिष्यामः

लङ्लकारः (अतीतकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अखादत्	अखादताम्	अखादन्
मध्यमपुरुषः	अखादः	अखादतम्	अखादत
उत्तमपुरुषः	अखादम्	अखादाव	अखादाम

लोट्लकारः (अनुज्ञा/आदेशः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	खादतु	खादताम्	खादन्तु
मध्यमपुरुषः	खाद	खादतम्	खादत
उत्तमपुरुषः	खादानि	खादाव	खादाम

विधिलिङ्लकारः (विधिः/सम्भावना)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	खादेत्	खादेताम्	खादेयुः
मध्यमपुरुषः	खादेः	खादेतम्	खादेत
उत्तमपुरुषः	खादेयम्	खादेव	खादेम

एवमेव धाव्, खेल्, गम् (गच्छ), पठ्, रक्ष्, भ्रम्, पा (पिब्), हस्, मिल्, क्रीड्,-इत्यादीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

इष् (इच्छा करना)

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
मध्यमपुरुषः	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उत्तमपुरुषः	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लृट्लकारः (भविष्यत्कालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उत्तमपुरुषः	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

लङ्लकारः (अतीतकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
मध्यमपुरुषः	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उत्तमपुरुषः	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लोट्लकारः (अनुज्ञा/आदेशः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
मध्यमपुरुषः	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उत्तमपुरुषः	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

विधिलिङ्लकारः (विधिः/सम्भावना)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
मध्यमपुरुषः	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उत्तमपुरुषः	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

संख्यावाचकाः शब्दाः (५१ तः १००)

५१	एकपञ्चाशत्
५२	द्वापञ्चाशत्/द्विपञ्चाशत्
५३	त्रयःपञ्चाशत्/त्रिपञ्चाशत्
५४	चतुःपञ्चाशत्
५५	पञ्चपञ्चाशत्
५६	षट्पञ्चाशत्
५७	सप्तपञ्चाशत्
५८	अष्टापञ्चाशत्/अष्टपञ्चाशत्
५९	नवपञ्चाशत्/एकोनषष्टिः
६०	षष्टिः
६१	एकषष्टिः
६२	द्वाषष्टिः/द्विषष्टिः
६३	त्रयष्षष्टिः/त्रिषष्टिः
६४	चतुष्षष्टिः
६५	पञ्चषष्टिः
६६	षट्षष्टिः
६७	सप्तषष्टिः
६८	अष्टाषष्टिः/अष्टषष्टिः
६९	नवषष्टिः/एकोनसप्ततिः
७०	सप्ततिः
७१	एकसप्ततिः
७२	द्वासप्ततिः/द्विसप्ततिः
७३	त्रिसप्ततिः/त्रयस्सप्ततिः
७४	चतुस्सप्ततिः

७५	पञ्चसप्ततिः	८८	अष्टाशीतिः
७६	षट्सप्ततिः	८९	नवाशीतिः/एकोननवतिः
७७	सप्तसप्ततिः	९०	नवतिः
७८	अष्टासप्ततिः/अष्टसप्ततिः	९१	एकनवतिः
७९	नवसप्ततिः/एकोनाशीतिः	९२	द्वानवतिः/द्विनवतिः
८०	अशीतिः	९३	त्रयोनवतिः/त्रिनवतिः
८१	एकाशीतिः	९४	चतुर्नवतिः
८२	द्व्यशीतिः	९५	पञ्चनवतिः
८३	त्र्यशीतिः	९६	षण्णवतिः
८४	चतुरशीतिः	९७	सप्तनवतिः
८५	पञ्चाशीतिः	९८	अष्टानवतिः/अष्टनवतिः
८६	षडशीतिः	९९	नवनवतिः/एकोनशतम्
८७	सप्ताशीतिः	१००	शतम्